वर्ष –01, अंक – 03 (जुलाई–सितम्बर, 2023)

राजभवन संवाद

राजभवन, बिहार की त्रैमासिक पत्रिका

- ‘टीबी हारेगा, देश जीतेगा’
- संस्कृति से संस्कृत का गहरा नाता
- शिक्षकों का योगदान अतुलनीय होता है
- महान नीतिज्ञ आचार्य चाणक्य
- बराबर की पहाड़ियाँ
- लोक नृत्य जट–जटिन

काव्य स्वर

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास व राजनीति विज्ञान में बीए किया। उन्होंने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी और उर्दू का गहन अध्ययन किया था। बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक विद्यालय में अध्यापक हो गये। 1934 से 1947 तक बिहार सरकार की सेवा में सब–रजिस्टार और प्रचार विभाग के उपनिदेशक पदों पर कार्य किया। 1950 से 1952 तक लंगट सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर में हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे, भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के पद पर 1963 से 1965 के बीच कार्य किया और उसके बाद भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार बने।

उन्हें पद्म विभूषण की उपाधि से भी अलंकृत किया गया। उनकी पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 'उर्वशी' के लिये भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।

दिनकर स्वतन्त्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद राष्ट्रकवि के नाम से जाने गये। वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे। एक ओर उनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रान्ति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल शृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति भी है। इन्हीं दो प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष हमें उनकी कुरुक्षेत्र और उर्वशी नामक उनकी कृतियों में मिलता है। अपनी लेखनी के माध्यम से वह सदा अमर रहेंगे।

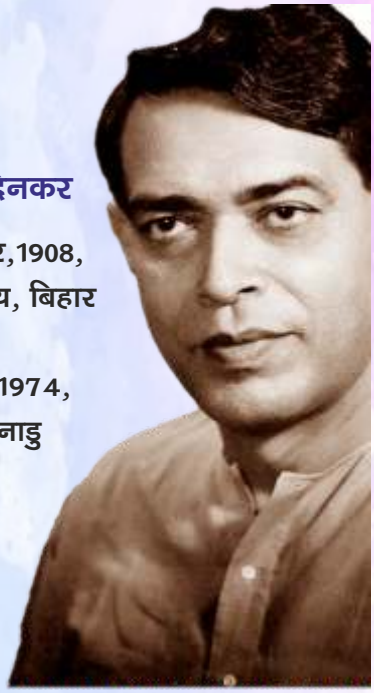

रामधारी सिंह दिनकर

जन्म–23 सितम्बर,1908,
सिमरिया, बेगूसराय, बिहार

मृत्यु–24 अप्रैल,1974,
मद्रास, तमिलनाडु

कलम या कि तलवार

दो में से क्या तुम्हे चाहिए कलम या कि तलवार,
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति विजय अपार।

अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे मीठे गान,
या तलवार पकड़ जीतोगे बाहर का मैदान।

कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगाने वाली,
दिल की नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली।

पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे।

एक भेद है और वहां निर्भय होते नर–नारी,
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी।

जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बादल में बिजली होती, होते दिमाग में गोले।

जहाँ पालते लोग लहू में हालाहल की धार,
क्या चिंता यदि वहाँ हाथ में नहीं हुई तलवार।

वर्ष -01, अंक - 03 (जुलाई-सितम्बर, 2023)

राजभवन संवाद
राजभवन, बिहार की त्रैमासिक पत्रिका

प्रधान संपादक
रॉबर्ट एल.चोंग्थू

कार्यकारी संपादक
राकेश पाण्डेय

संपादक मंडल
प्रीतेश देसाई
संजय कुमार
धीरज नारायण सुधाँशु

सम्पादकीय पता : जन-सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना, बिहार - 800022
ई मेल : pr.rajbhavan@gmail.com
दूरभाष : 0612-2786119
E-Patrika - www.governor.bih.nic.in

प्रकाशक/मुद्रक : स्वत्व मीडिया नेटवर्क प्रा.लि., नियर कुल्हड़िया कॉम्प्लेक्स, पटना, बिहार से प्रकाशित एवं मारुति ऑफसेट, डी.एन. दास रोड, बंगाली अखाड़ा, पटना से मुद्रित।
ई मेल : swatvapatrika@gmail.com
दूरभाष : 9608190823

जन-जन के संकल्प से ही होगा 'टीबी मुक्त' भारत

'राजभवन संवाद' त्रैमासिक पत्रिका का तीसरा अंक (जुलाई–सितम्बर, 2023) अन्य स्थायी कॉलम और माननीय राज्यपाल के विभिन्न संबोधनों व गतिविधियों की सूचनात्मक विवरणियों के साथ 'टीबी मुक्त भारत अभियान' को सफल बनाने के आह्वान को समर्पित है। हम सब जानते हैं कि मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही क्षय रोग (टीबी) एक गहन सामाजिक–आर्थिक चुनौती बना हुआ है। इस रोग पर नियंत्रण के लिए भारत सरकार ने 1962 से राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम शुरू किया, किन्तु दशकों के प्रयास के बावजूद अपेक्षित सफलता नहीं मिली। वर्ष 2020 में यक्ष्मा से कुल 1.5 मिलियन लोगों की मृत्यु हुई और अनुमानतः 10 मिलियन लोग दुनिया भर में यक्ष्मा से बीमार हुए। भारत में दुनिया का सबसे अधिक यक्ष्मा रोगी यानी करीब 26 लाख लोग इस रोग से ग्रसित हैं और लगभग 4 लाख लोग प्रत्येक वर्ष इस बीमारी से मरते हैं।

माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने विगत 09 सितम्बर, 2022 को वर्चुअल रूप से प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान को लॉन्च करते हुए कहा था कि इसे जन–आंदोलन बनाना सभी नागरिकों का कर्तव्य है, क्योंकि टीबी हमारे देश में अन्य सभी संक्रामक बीमारियों से सबसे अधिक मृत्यु का कारण है। ऐसे में, वर्ष 2025 तक यक्ष्मा को पूरी तरह से समाप्त करने की भारत की प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए समुदाय की भागीदारी आवश्यक है। इस अभियान में नि–क्षय मित्र पहल सबसे महत्वपूर्ण है जो यक्ष्मा के इलाज के लिए अतिरिक्त नैदानिक, पोषण और व्यावसायिक सहायता सुनिश्चित करता है।

प्रस्तुत अंक में 'काव्य स्वर' के तहत राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के बारे में संक्षिप्त जानकारी व उनकी एक काव्य रचना के साथ ही 'बिहार विभूति' के अन्तर्गत महान कूटनीतिज्ञ आचार्य चाणक्य, 'धरोहर' के अन्तर्गत 'मानव निर्मित गुफाओं का उत्कृष्ट नमूना : बराबर की पहाड़ियां', 'बिहारी स्वाद' के तहत 'मिठाई का राजाःसिलाव का खाजा' तथा 'लोक संस्कृति' कॉलम में 'लोक नृत्य जट–जटिन' के समावेश से यह अंक सुरूचिपूर्ण होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

आशा है, पहले की तरह यह अंक भी आपको पसंद आएगा।

शुभेच्छाओं के साथ–

(रॉबर्ट एल० चोंग्थू)
राज्यपाल के प्रधान सचिव

इस अंक में...

'टीबी हारेगा, देश जीतेगा'	04
भारतीय मनीषियों के दर्शन एवं चिंतन को ग्राह्य बनाने की जरूरत	06
ट्रांसजेन्डर हमारे समाज के अंग हैं-राज्यपाल	07
ग्राम केन्द्रित अर्थव्यवस्था के विकास के लिए करें प्रयास	08
देहदान एवं अंगदान के प्रति लोगों को जागरूक करें-राज्यपाल	09
वैदिक ऋचाओं के भावों को आज के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की जरूरत	10
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से युवा होंगे नई ऊर्जा से अनुप्राणित	11
सैनिकों के लिए प्रत्येक घर से एक राखी भेजें-राज्यपाल	12
देश की सभी भाषाओं की विशेषता बनी रहनी चाहिए-राज्यपाल	13
मदरसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएं	14
स्वामी विवेकानंद नर सेवा को ही ईश्वर की सेवा मानते थे-राज्यपाल	15
शिक्षक बच्चों को अच्छा इंसान बनायें-राज्यपाल	17
महान नीतिज्ञ आचार्य चाणक्य	21
मानव निर्मित गुफाओं का उत्कृष्ट नमूना : बराबर की पहाड़ियां	26
मिठाई का राजा सिलाव का खाजा	28
लोक नृत्य जट-जटिन : नारी मनोभाव की सहज अभिव्यक्ति	29

आवरण : वैशाली का अशोक स्तंभ
फोटो : सौजन्य इंटरनेट

'टी.बी. हारेगा, देश जीतेगा'

राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर
राज्यपाल, बिहार

हम सब अवगत हैं कि यक्ष्मा (टी०बी०) एक संक्रामक रोग है। भारत में संक्रामक रोगों से होनेवाली मृत्यु में सबसे अधिक संख्या टी०बी० से मरनेवालों की है। विश्व में टी०बी० रूग्णों की कुल संख्या का 28 प्रतिशत भारत में है। अपने प्रदेश बिहार में एक लाख तीस हजार से अधिक टी०बी० रूग्ण हैं। भारत की आजादी के अमृतकाल में इस जानलेवा रोग के समूल उन्मूलन का संकल्प जन–स्वास्थ्य के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

इस बीमारी के कारण स्वास्थ्य और जीवन की क्षति तथा रोगी की आर्थिक स्थिति पर कुप्रभाव को ध्यान में रखते हुए माननीय प्रधानमंत्री ने भारत से वर्ष 2025 तक टी०बी० के उन्मूलन का आवाहन किया है। इस क्रम में भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा 09 सितम्बर, 2022 को प्रधानमंत्री टी०बी० मुक्त भारत अभियान की शुरूआत की गई।

इस अभियान की सफलता के लिए सरकारी पहल एवं सहायता के साथ–साथ जन समुदाय की व्यक्तिगत एवं सामूहिक भागीदारी अत्यावश्यक है। टी०बी० उन्मूलन के इस अभियान की सफलता में नि–क्षय मित्र बनकर हम अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। को–ऑपरेटिव सोसाइटी, कॉरपोरेट्स, जन प्रतिनिधि, स्वयंसेवी संस्थायें, राजनीतिक दल या कोई भी व्यक्ति नि–क्षय मित्र बनकर टी०बी० रोगियों को इलाज के दौरान उन्हें मासिक फूड बास्केट किट देकर तथा जाँच व रोजगार संबंधी सहायता पहुँचा सकते हैं।

नि–क्षय मित्र के रूप में निबंधित कोई व्यक्ति किसी भी टी०बी० रूग्ण को गोद लेकर सहायता पहुँचा सकता है, जबकि इस रूप में निबंधित संस्थाएँ किसी खास भौगोलिक क्षेत्र को गोद ले सकते हैं। टी०बी० के एक मरीज को गोद लेकर उसकी सहायता करने पर नि–क्षय मित्र को 800 रु० से 1000 रु० तक प्रति माह 6–9 महीने तक का व्यय करना पड़ता है।

वर्ष 2025 तक देश से टी०बी० उन्मूलन का सौ प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने के लिए स्वास्थ्य विभाग के साथ–साथ हर जिम्मेवार नागरिक को अपनी ओर से हर संभव प्रयास करना चाहिए। बिहार में 2021 में 1 लाख 32 हजार 145 नए टी०बी० रोगियों की पहचान हुई थी, इनमें से 61 हजार 916 की सरकारी और 70 हजार 229 की निजी अस्पतालों में पहचान की गई थी। सामूहिक संकल्प और जागरूकता से ही 'टी०बी० हारेगा और देश जीतेगा'। इसलिए सबको मिलकर संकल्प लेना होगा कि हम सब एकजुट होकर टी०बी० से लड़ेंगे। राष्ट्रीय यक्ष्मा उन्मूलन कार्यक्रम के तहत बिहार में स्वास्थ्य कर्मियों ने सराहनीय कार्य करके टी०बी० उन्मूलन लक्ष्य के प्रति अपनी संवेदनशीलता दिखाई है। नि–क्षय मित्रों का आगे आना भी सराहनीय पहल है।

अगर 'नि–क्षय मित्र कार्यक्रम' को सभी लोग एक अभियान की तरह लें तो हम 2025 तक 'यक्ष्मामुक्त' देश और प्रदेश बनाने में निश्चित ही सफल होंगे। जिस प्रकार से हमने 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से कोविड जैसी वैश्विक महामारी को परास्त किया है उसी प्रकार अब क्षय रोग को भी हराना होगा। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अगर जन–जन एक साथ मिल जाए तब ही यह संभव हो सकेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने इस कार्यक्रम को शुरू करके हमें एक अवसर दिया है ताकि हम सब एकजुट होकर टी०बी० जैसे रोग को हरा सकें। नि–क्षय मित्र बनकर आपसे जितना हो सके उतना सहयोग करके आप क्षय से पीड़ित रोगी को जरूर गोद लें।

आज भी क्षय रोग विश्व के सबसे घातक संक्रामक रोगों में से एक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, प्रतिदिन 4100 से अधिक लोगों की मृत्यु क्षय रोग के कारण होती है और लगभग 28,000 लोग इस बीमारी से पीड़ित होते हैं। एक दशक से अधिक समय में पहली बार वर्ष 2020 में क्षय रोग से होने वाली मौतों में वृद्धि देखने को मिली थी। वर्ष 1882 में 24 मार्च को डॉ० रॉबर्ट कोच ने क्षय रोग के कारक 'माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस' की खोज की घोषणा की थी और उनकी खोज ने इस बीमारी के निदान एवं उपचार का मार्ग प्रशस्त किया। भारत का लक्ष्य वर्ष 2025 तक देश को क्षय रोग मुक्त

बनाना है, जबकि इसके उन्मूलन के लिये वैश्विक लक्ष्य वर्ष 2030 है। वर्ष 2023 के लिये थीम लिया गया है, 'हाँ! हम क्षय रोग का उन्मूलन कर सकते हैं!' यह हमारा संकल्प है। अगर हम सम्मिलित प्रयास करें तो समय से पहले इस रोग से अपने प्रदेश और देश को मुक्त करा सकते हैं।

क्षय रोग माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस के कारण होने वाला एक संक्रमण है। यह व्यावहारिक रूप से शरीर के किसी भी अंग को प्रभावित कर सकता है। सबसे सामान्य फेफड़े, फुफ्फुस (फेफड़ों के चारों ओर स्तर), लिम्फ नोड्स, आँतों, रीढ़ और मस्तिष्क हैं। यह एक वायुजनित संक्रमण है जो संक्रमित के साथ निकट संपर्क, विशेष रूप से खराब वेंटिलेशन वाली घनी आबादी जैसे स्थानों से फैलता है। सक्रिय फेफड़े की टी०बी० के सामान्य लक्षण खाँसी के साथ बलगम और कभी–कभी खून आना, सीने में दर्द, कमजोरी, वजन घटना, ज्वर एवं रात को पसीना आना आदि हैं। टी०बी० एक उपचार योग्य बीमारी है।

WHO के अनुसार, वर्ष 2020 में क्षय रोग से पीड़ित लोगों की संख्या लगभग 99,00,000 थी और इससे मरने वाले लोगों की संख्या लगभग 1,500,000 थी। क्षय रोग के उन्मूलन के लिये विश्व स्तर पर किये गए प्रयासों से वर्ष 2000 से अब तक 66,000,000 लोगों की जान बचाई जा चुकी है। विश्व क्षय रोग रिपोर्ट–2022 के अनुसार, विश्व में क्षय रोग के लगभग 28 प्रतिशत मामले भारत में हैं। (स्रोतः डाउन टू अर्थ)

भारत में वर्ष 2018 में नि–क्षय पोषण कार्यक्रम शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य पोषण संबंधी जरूरतों के लिये प्रतिमाह 500 रुपए का प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) प्रदान कर हर क्षय रोगी की मदद करना था। देश के कई हिस्सों में अभी भी ट्यूबरक्यूलोसिस से पीड़ित मरीजों को संतुलित आहार नहीं मिल पाता है। इसके लिए हर महीने 500 रुपए की मदद भी की जाती है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं होती है। साल 2025 तक भारत को टी०बी० मुक्त राष्ट्र बनाने का लक्ष्य तय कर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने सामुदायिक स्तर पर क्षय रोग उन्मूलन के लिए जनभागीदारी बढ़ाने का फैसला किया। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की पहल पर अब पूरे देश में 'नि–क्षय मित्र' कार्यक्रम के जरिए टी०बी० को देश से खत्म करने का संकल्प लिया गया है।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ० भारती प्रवीण पवार ने 09 मार्च, 2023 तक का आंकड़ा देते हुए राज्यसभा में बताया कि देश में 9.55 लाख टी०बी० के रोगियों को गोद लिया गया है, जबकि भारत में गोद लेने की प्रक्रिया में सहमति दर्शाने वाले टी०बी० के कुल 9.69 लाख रोगी हैं। यानी कि 95 फीसदी से ज्यादा सहमति वाले रोगी गोद लिए जा चुके हैं। हालांकि भारत सरकार ने टी०बी० मुक्त भारत अभियान के तहत कई तरह के अन्य कार्यक्रम भी शुरू किया है जिसमें से एक नि–क्षय पोषण भी है।

मेरी ओर से 51 मरीजों को गोद लिया गया है। राजभवन के राजेन्द्र मंडप में 01 अगस्त, 2023 को 25 टी०बी० रोगियों को जबकि 26 मरीजों को 24 जुलाई, 2023 को फूड बास्केट का वितरण किया गया था। विश्व यक्ष्मा दिवस की पूर्व संध्या 23 मार्च, 2023 को राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारियों ने भी नि–क्षय मित्र के रूप में अपना निबंधन कराया था। टी०बी० के मरीजों को नियमित रूप से दवा और पोषक आहार लेने की जरूरत होती है। टी०बी० के मरीज दवा के लगातार सेवन तथा अपनी संकल्प शक्ति से रोगमुक्त हो जाएँगे। हमें आगामी एक वर्ष में बिहार को टी०बी० से मुक्त करने का संकल्प लेना चाहिए।

घर की समस्या गाँव की और गाँव की समस्या पूरे देश की होती है तथा इसके समाधान हेतु सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होती है। प्रधानमंत्री टी०बी० मुक्त भारत अभियान के तहत देश को टी०बी० मुक्त करना है। इसके लिए टी०बी० ग्रस्त रोगियों एवं स्वस्थ व्यक्तियों को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। पोलियो, चेचक जैसी अनेक संक्रामक रोगों पर हमने अपने संकल्प से विजय पाया है, अब टी०बी० से भी भारत को मुक्त बनाना है। हम सब मिल कर संकल्प लें–'टी०बी० हारेगा, देश जीतेगा'। आइए! हम बिहार को वर्ष 2024 के अंत तक टी०बी० मुक्त बनाने हेतु नि–क्षय मित्र बनकर प्रधानमंत्री टी०बी० मुक्त भारत अभियान में सहभागी बनने का संकल्प लें।

भारतीय मनीषियों के दर्शन एवं चिंतन धाराओं को सरल एवं ग्राह्य रुप में प्रस्तुत करना आवश्यक–राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने बिहार विधान परिषद् सभागार में 02 जुलाई, 2023 को आयोजित आचार्य अभिनवगुप्त के कश्मीरी शैव दर्शन पर आधारित प्रो. शत्रुघ्न प्रसाद स्मृति व्याख्यानमाला को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय मनीषियों के दर्शन एवं चिंतन धाराओं को सरल एवं ग्राह्य रुप में आमजन के सामने प्रस्तुत करने की आवश्यकता है ताकि वे इसे आसानी से समझ सकें।

उन्होंने कहा कि हमारे देश की परंपराएं, दर्शन एवं विचार सनातन हैं तथा आध्यात्मिकता इसका प्राण रहा है। इसकी प्रासंगिकता को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रेखांकित कर हम अपने आध्यात्मिक दर्शन को पूरे विश्व के सामने रख सकते हैं। हमारे ऋषिगण के मन में कोई भेदभाव नहीं था और वे समदर्शी थे तथा उनके द्वारा प्रदत्त दर्शन एवं विचार सबके लिए उपयोगी हैं।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार का इतिहास काफी पुराना है परन्तु हमें अपने राज्य और देश के भविष्य के बारे में भी सोचना चाहिए। उन्होंने कहा कि स्व. शत्रुघ्न प्रसाद देश की एकता और अखंडता के प्रतीक हैं तथा उनकी स्मृति में आगामी वर्षों में भी विभिन्न विषयों पर व्याख्यान माला का आयोजन किया जाना चाहिए।

व्याख्यानमाला को संबोधित करते हुए माननीय राज्यपाल (02 जुलाई, 2023)

दीप प्रज्वलन कर व्याख्यानमाला का उद्घाटन करते हुए राज्यपाल (02 जुलाई, 2023)

इस अवसर पर संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के पूर्व कुलपति आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, झारखंड के निदेशक–सह–प्रो. शत्रुघ्न प्रसाद स्मृति व्याख्यानमाला आयोजन समिति के संयोजक श्री रणेन्द्र कुमार, राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के सदस्य–सह–बाल शल्य चिकित्सा विभाग, आई.जी. आई.एम.एस., पटना के विभागाध्यक्ष डॉ. (प्रो.) विजयेन्द्र कुमार, श्रीमती उर्मिला प्रसाद, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के दर्शनशास्त्र के प्रो. योगेश शर्मा तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

ट्रांसजेन्डर हमारे समाज के अंग हैं –राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने सतरंगी दोस्ताना रेस्ट्रो, पटना में 26 जुलाई, 2023 को 'दोस्तानासफर' द्वारा आयोजित 'Inclusion of Transgender Person in Higher Education'कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि ट्रांसजेन्डर हमारे समाज के अंग हैं और उनकी समस्याओं के समाधान की जिम्मेदारी पूरे देश और समाज की है।

उन्होंने कहा कि हमारी कमियों के कारण ट्रांसजेन्डर समुदाय के बारे में समाज में भ्रामक अवधारणा है। इस समुदाय के लिए ट्रांसजेन्डर एक्ट एवं नियम बनाये गये हैं परन्तु इनके प्रति हमें अपनी सोच और मानसिकता बदलने की जरूरत है। भारतीय वाङ्गमय में सर्वजन के सुख की कामना की गई है और सर्वजन के तहत ट्रांसजेन्डर भी आते हैं। इनके भी अधिकार, समस्याएँ एवं भावनाएँ हैं।

''उच्च शिक्षा में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों का समावेश'' कार्यक्रम का उद्घाटन करते राज्यपाल (26 जुलाई, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि ट्रांसजेन्डर हमारे समाज के अंग हैं। समाज का कोई अंग अविकसित रहने पर स्वस्थ समाज का निर्माण नहीं हो सकता है। इनकी समस्याओं के समाधान के लिए सबकी सहभागिता आवश्यक है। ट्रांसजेन्डर को समानता का दर्जा देने से उनकी समस्याओं का समाधान हो सकता है। राज्यपाल ने कहा कि वह उनकी समस्याओं के समाधान के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे तथा कुलाधिपति होने के नाते राज्य के विश्वविद्यालयों में उनकी समानता सुनिश्चित कराने तथा अन्य विद्यार्थियों की तरह सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक कार्रवाई करेंगे। उन्होंने मीडिया कर्मियों से ट्रांसजेन्डर से जुड़े मुद्दों को समाज के सामने लाने को कहा।

इस अवसर पर माननीय विधान पार्षद प्रो. राम बचन राय, दोस्तानासफर की सचिव रेशमा प्रसाद एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

भारत की शक्ति आध्यात्मिकता में निहित है –राज्यपाल

कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते हुए माननीय राज्यपाल (08 अगस्त, 2023)

''भारत की शक्ति आध्यात्मिकता में निहित है और यह जितनी सुदृढ़ होगी, विश्व में हमारी साख उतनी की बढ़ती जाएगी।''– यह बातें माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 08 अगस्त, 2023 को अन्तर्राष्ट्रीय चिन्मय मिशन के 71वें स्थापना दिवस के अवसर पर आशियाना–रामनगरी रोड, पटना स्थित एक होटल में आयोजित कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि केरल राज्य ने सैकडों वर्ष पूर्व हमें आदिशंकराचार्य और इस शताब्दी में स्वामी चिन्मयानंद जी को दिया। इन दोनों महापुरुषों के विचारों में समानता थी। शंकराचार्य अद्वैतदर्शन के मुख्य प्रवर्तक थे। उन्होंने भारत में चार पीठों की स्थापना की। स्वामी चिन्मयानंद जी ने भी सनातन परम्परा के रक्षार्थ अपने जीवन के एक–एक क्षण को समर्पित कर दिया। उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता को जीवन का आधार बनाकर देश के विभिन्न राज्यों में इसका प्रचार किया तथा वह गीता ज्ञान यज्ञ की निरंतरता के लिए लगातार प्रयत्नशील रहे। स्वामी चिन्मयानंद जी एक सच्चे कर्मयोगी थे और आज भी वह हमारे विचारों में हैं।

कार्यक्रम को पटना उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री शिवाजी पाण्डेय तथा विश्व हिन्दू परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ आर.एन. सिंह ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर चिन्मय मिशन, पटना के महासचिव श्री सुभाष चन्द्र एवं सदस्य डॉ बसंत कुमार सिन्हा, भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. विजय किशोरपुरिया, माँ वैष्णो देवी सेवा समिति के अध्यक्ष श्री जगजीवन सिंह एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

ग्राम केन्द्रित अर्थव्यवस्था के विकास के लिए प्रयास करें ग्राम संसद –राज्यपाल

समारोह में लोगों को संबोधित करते हुए माननीय राज्यपाल (30 जुलाई, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने होटल मौर्या, पटना में 30 जुलाई, 2023 को आयोजित 'ग्राम संसद –बिहार चैप्टर ।।। कॉन्क्लेव' के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि ग्राम संसद को ग्राम केन्द्रित अर्थव्यवस्था के विकास के लिए प्रयास करना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि गाँवों में उपलब्ध संसाधनों को विकसित कर ग्रामवासियों को रोजगार उपलब्ध कराया जाना चाहिए। ग्राम संसद का लक्ष्य होना चाहिए कि ग्रामीणों को रोजगार के लिए बाहर नहीं जाना पड़ें। उन्होंने कहा कि किसानों को प्राकृतिक खेती, बहुफसली कृषि तथा वनौषधियों की खेती के लिए प्रेरित करने के साथ–साथ उन्हें इसके लिए उचित मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए ताकि खेतों की उर्वरा शक्ति बनी रहे तथा किसानों की आय में भी वृद्धि हो सके। गाँवों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग आदि की सुविधायें उपलब्ध होने चाहिए। ग्राम संसद को ग्राम केंद्रित अर्थव्यवस्था के विकास के लिए प्रयास करना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि हरेक गाँव का अपना वेबसाईट होना चाहिए जिसमें उस गाँव की विशेषताओं से संबंधित जानकारियाँ उपलब्ध हो। इससे उस गाँव की पहचान पूरी दुनिया में हो सकेगी। उन्होंने कहा कि गाँव हमारा प्राण है। गाँधीजी के रामराज की परिकल्पना ग्राम राज की ही थी। हम सबका कर्त्तव्य है कि गाँवों के समुचित विकास के लिए प्रयत्न करें तभी सही अर्थों में गाँवों में बसनेवाले भारत का विकास हो सकेगा।

इस अवसर पर राज्यपाल ने उत्कृष्ट कार्य करनेवाले विभिन्न पंचायतों के मुखियागण को सम्मानित भी किया। कार्यक्रम को बिहार के माननीय पंचायती राज मंत्री श्री मुरारी प्रसाद गौतम तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ सीपी ठाकुर ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर ग्राम संसद के संरक्षक माननीय विधान पार्षद डॉ संजय मयूख, ग्राम संसद के सह–संस्थापक श्री ब्रजेश शर्मा एवं श्री दीपक ठाकुर, योग संस्कृति न्यास के संस्थापक आचार्य श्री धर्मवीर तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए माननीय राज्यपाल (30 जुलाई, 2023)

देहदान एवं अंगदान के प्रति लोगों को जागरूक करें –राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 13 अगस्त, 2023 को प्रथम भारतीय अंगदान दिवस एवं नवम अन्तर्राष्ट्रीय अंगदान दिवस के अवसर पर विद्यापति भवन, पटना में दधीचि देहदान समिति, बिहार द्वारा आयोजित सम्मान व संकल्प समारोह तथा चतुर्थ राज्यस्तरीय सम्मेलन का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि अंगदान एवं देहदान की परम्परा हमारी संस्कृति में अत्यन्त प्राचीनकाल से ही है तथा दधीचि और शिवि जैसे महापुरुष इसके उदाहरण रहे हैं। हमें अंगदान एवं देहदान के बारे में लोगों को जागरूक करना चाहिए।

राज्यपाल ने दधीचि देहदान समिति, बिहार के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसका कार्य पूरे समाज के लिए है तथा इसने हमारे समक्ष एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। हम सबकी यह व्यक्तिगत जिम्मेदारी है कि ऐसे कार्यों में अपना सहयोग दें।

कार्यक्रम को सिक्किम के पूर्व राज्यपाल एवं दधीचि देहदान समिति के अध्यक्ष श्री गंगा प्रसाद, समिति के मुख्य संरक्षक एवं माननीय सांसद श्री सुशील कुमार मोदी, डोनेट लाइफ के संस्थापक श्री नीलेश मंडेलवाला, सोटो के चेयरमेन डॉ. मनीष मंडल, रूबन मेमोरियल अस्पताल के डॉ. सत्यजीत सिन्हा आदि ने भी संबोधित किया।

समारोह में लोगों को संबोधित करते हुए माननीय राज्यपाल (13 अगस्त, 2023)

इस अवसर पर समिति के महासचिव पद्मश्री श्री बिमल जैन व उपाध्यक्ष डॉ. सुभाष प्रसाद, समाजसेवी श्री नीरव मंडेलवाला, डॉ. ओम कुमार, डॉ. अवनीश कुमार, नालंदा मेडिकल कॉलेज के डॉ. प्रदीप कारक, दरभंगा मेडिकल कॉलेज के डॉ. आसिफ शाहनवाज, डॉ. सुधीर कुमार, डॉ. सचिन, डॉ. अभिषेक एवं अन्य मेडिकल कॉलेजों के चिकित्सकगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

संस्कृति से संस्कृत का गहरा नाता – राज्यपाल

शोभा यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते राज्यपाल (28 अगस्त, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने संस्कृत भारती, बिहार प्रांत के तत्वावधान में 28 अगस्त, 2023 को आयोजित राज्यस्तरीय संस्कृत सप्ताह समारोह का शुभारम्भ राजभवन के दरबार हॉल में किया।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा अत्यंत पुरातन है तथा इसका हमारे जीवन में काफी महत्व है। हमारी संस्कृति से संस्कृत का काफी गहरा नाता है। यह हमारी अपनी भाषा है तथा इसने हमें ज्ञान–विज्ञान में उन्नत बनाया है एवं वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव के साथ विश्व को देखने की दृष्टि दी है। उन्होंने इसके प्रचार–प्रसार पर जोर देते हुए कहा कि संस्कृत के सहज एवं सरल शब्दों का प्रयोग कर हम इसे लोकभाषा बना सकते हैं।

कार्यक्रम के बाद राज्यपाल ने राज्य स्तरीय संस्कृत शोभा यात्रा को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षों की रक्षा का संदेश देते हुए राजभवन परिसर में अवस्थित कल्पवृक्ष को राखी भी बाँधी।

कार्यक्रम में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री आर.एल. चोंग्थू, संस्कृत भारती के अखिल भारत प्रचार प्रमुख श्री शिरीषदत्तात्रेय भेडसगावर एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

वैदिक ऋचाओं के भावों को आज के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की जरूरत

"हमारी परम्परा व आध्यात्मिकता तथा वर्तमान आधुनिकता के बीच समन्वय स्थापित करते हुए वैदिक ऋचाओं के भावों को आज के परिप्रेक्ष्य में सहज एवं सरल ढंग से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है ताकि सबलोग इन्हें आसानी से समझ सकें।" –यह बातें माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 17 अगस्त, 2023 को महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं महावीर मंदिर, पटना के संयुक्त तत्वावधान में महाराणा प्रताप भवन, पटना में आयोजित त्रिदिवसीय वैदिक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कही।

राज्यपाल ने कहा कि मैक्समूलर सहित अनेक विदेशी विद्वानों ने वेदों की व्याख्या अपने तरीके से की और इसमें उनका हित निहित था। आवश्यकता है कि वैदिक ऋचाओं के भावों को युवा पीढ़ी के सामने आज के संदर्भ में सहज एवं सरल ढंग से रखा जाए। उन्होंने देश में समरसता की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इसका भाव वेदों से आता है। उन्होंने कहा कि बच्चों की शिक्षा में वेदाध्ययन को शामिल किया जाना चाहिए।

समारोह में लोगों को संबोधित करते हुए राज्यपाल (17 अगस्त, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि भारत की आत्मा आध्यात्मिकता में निहित है तथा हजारों वर्षों से हमने इसे सँजोया है। सबके प्रयासों से इस विषय को आगे लेकर बढ़ने से ही हम भारत को विश्व गुरु बना सकेंगे।

कार्यक्रम को श्री महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव श्री किशोर कुणाल तथा महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के उपाध्यक्ष डॉ. प्रफुल्ल कुमार मिश्र ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर अनेक वैदिक विद्वान, वेदपाठी आचार्य व विद्यार्थीगण, गणमान्य व्यक्ति एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

बच्चों के ओरल हेल्थ पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है– राज्यपाल

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (09 सितम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने इंडियन डेन्टल एसोसिएशन के सेन्ट्रल काउन्सिल की पटना में 09 सितम्बर, 2023 को आयोजित दो दिवसीय बैठक के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों के ओरल हेल्थ पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इसके लिए विद्यालयों में उनके दाँतों की नियमित जाँच की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि यह विषय एसोसिएशन की प्राथमिकता में होना चाहिए।

राज्यपाल ने अच्छे व्यक्ति के निर्माण की जरुरत पर बल देते हुए कहा कि एक अच्छा इंसान हमेशा अच्छा और समाजपयोगी कार्य करता है, चाहे वह किसी भी पेशे से संबंध रखता हो। उन्होंने दंत चिकित्सकों से जरूरतमंद मरीजों की चिकित्सा करने को कहा। उन्होंने खुशी व्यक्त की कि चिकित्सकगण अपने देश में रहकर रोगियों की सेवा कर रहे हैं।

इस अवसर पर राज्यपाल ने दंत चिकित्सकों को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित भी किया। कार्यक्रम में इंडियन डेन्टल एसोसियेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० राजीव कुमार चुग, राष्ट्रीय महासचिव डॉ० अशोक धोबले, प्रदेश अध्यक्ष डॉ० श्रीप्रकाश कुमार, प्रदेश सचिव डॉ० कुमार मानवेन्द्र, देश के विभिन्न राज्यों से आए हुए केन्द्रीय परिषद् के सदस्यगण, दंत चिकित्सकगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल कार्यान्वयन से युवा नई ऊर्जा से अनुप्राणित होंगे– राज्यपाल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 हमारे समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। यह जमीन से जुड़ी हुई ऐसी शिक्षा नीति है जो हमारी मौजूदा जरूरतों को भी पूरा करती है। यह शिक्षा नीति हमारी औपनिवेशिक सोच को बदलकर युवाओं में नयी ऊर्जा भरती है। उक्त उद्‌गार राज्यपाल सह कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 27 अगस्त, 2023 को ललित नारायण मिश्र कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, मुजफ्फरपुर के तत्वावधान में होटल मौर्या, पटना में आयोजित एक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

उक्त अवसर पर राज्यपाल श्री आर्लेकर ने कहा कि पुरानी शिक्षा नीति केवल सेवक पैदा करते हुए बाबूगिरी को बढ़ावा देने वाली थी। इसमें सिर्फ विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति का ही परीक्षण हो पाता था। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को औपनिवेशिक सोच से उबारते हुए एक अच्छे मनुष्य के निर्माण की दिशा में एक सार्थक पहल के रूप में लागू किया गया है। राज्यपाल ने कहा कि एक अच्छा मनुष्य ही एक अच्छा चिकित्सक, शिक्षक, ऑफिसर या अच्छा राजनेता बन सकता है।

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए माननीय राज्यपाल (27 अगस्त, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि बिहारी अगर परिश्रमी एवं प्रतिभाशाली हैं तो फिर बिहार क्यों किसी से पीछे रहेगा? उन्होंने कहा कि हमें उस दिन की प्रतीक्षा है जब सिर्फ बिहारी विद्यार्थी ही उच्च शिक्षा प्राप्त करने बाहर नही जायेंगे बल्कि दूसरे प्रदेशों के विद्यार्थी भी बिहार में पढ़ने आयेंगे।

राज्यपाल ने कहा कि आज ऐसी शिक्षा नीति की आवश्यकता है जो हमें रोजगार याचक नही बल्कि रोजगार प्रदाता बनाये। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति इसी दिशा में एक ठोस पहल है।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार में भी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू हो गयी है। उन्होंने स्पष्ट किया की नई शिक्षा नीति में भी तीन वर्ष का ही स्नातकीय पाठ्यक्रम निर्धारित है, उच्च और विशिष्ट अध्ययन के लिए चौथे वर्ष में पढ़ाई का प्रावधान है।

राज्यपाल ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तत्परतापूर्वक कार्यान्वयन की जरूरत बताते हुए कहा कि हमारी आगामी पीढ़ियाँ इससे स्वतंत्र और युगान्तकारी परिवर्तन के लिए तैयार हो सकेंगी।

समारोह में लोगों को संबोधित करते हुए राज्यपाल (27 अगस्त, 2023)

सैनिकों के लिए प्रत्येक घर से एक राखी भेजें–राज्यपाल

'रक्षाबंधन के अवसर पर देश की सीमा पर तैनात हमारे सैनिकों के लिए हर घर से एक राखी भेजी जानी चाहिए। इससे हममें राष्ट्रभक्ति का भाव मजबूत होगा।'– यह बातें राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 28 अगस्त,2023 को केशव सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल, पटना में आयोजित 'रक्षाबंधन संवाद' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि गोवा के स्कूली विद्यार्थियों द्वारा सीमा पर तैनात जवानों के लिए प्रत्येक घर से एक–एक राखी भेजी जाती है और इस वर्ष 26 हजार राखियाँ भेजी गई हैं। बिहार के विद्यार्थियों द्वारा भी ऐसा किया जाना चाहिए। दीवाली के अवसर पर भी उन जवानों के लिए प्रत्येक घर में एक दिया जलाया जाना चाहिए।

हम सदियों से रक्षाबंधन का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाते आ रहे है और इस अवसर पर बहनें अपने भाइयों को राखी बाँधती है। परन्तु अब यह त्योहार भाई–बहन तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि अन्य लोगों को भी हम राखी बाँधते है ताकि हममें समाज के प्रत्येक व्यक्ति की रक्षा की जिम्मेदारी का भाव आ सके।

जवानों के लिए राखी भेंट करते हुए माननीय राज्यपाल (28 अगस्त, 2023)

इस अवसर पर राज्यपाल ने केशव सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल, पटना के विद्यार्थियों द्वारा दी गई राखियों को मेजर जनरल श्री विशाल अग्रवाल को सौंपा ताकि वे उन्हें देश की सीमा पर तैनात जवानों को भिजवा सकें। विद्यालय की छात्राओं ने राज्यपाल एवं अन्य महानुभावों को राखी बाँधी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में मेजर जनरल श्री विशाल अग्रवाल के अतिरिक्त केशव सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल, पटना के प्रधानाचार्य श्री देवानंद दूरदर्शी, वरिष्ठ सदस्य डॉ. मोहन सिंह, सचिव डॉ. राजीव कुमार सिंह एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

शिक्षकों का योगदान अतुलनीय होता है–राज्यपाल

समारोह में लोगों को संबोधित करते हुए राज्यपाल (05 सितम्बर, 2023)

''शिक्षकों का योगदान अतुलनीय होता है। वे हमारे आदर्श हैं और हमारा मार्गदर्शन करते हैं। हमें उनका सम्मान करना चाहिए।'' –यह बातें राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 05 सितम्बर, 2023 को शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित पटना विश्वविद्यालय के नव सौन्दर्यीकृत व्हीलर सीनेट हॉल के लोकार्पण कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि प्राथमिक शिक्षक से लेकर विश्वविद्यालय के कुलपति तक सभी हमारे शिक्षक हैं और हमें उन्हें उच्च दर्जा देना चाहिए। शिक्षक ही विद्यार्थियों को सुसंस्कृत बनाते हैं और इससे वे अनुशासित बनते हैं। संस्कार देने का केन्द्र विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय होते हैं।

राज्यपाल ने भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० एस० राधाकृष्णन को उनके जन्मदिन पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि वह सिर्फ एक शिक्षक ही नहीं बल्कि उच्च कोटि के विचारक एवं हमारे मार्गदर्शक भी थे तथा तत्कालीन समय की मांग को समझकर हमारे ऋषियों के अनुपम अवदानों का जागरण किया। देश के विकास के लिए डॉ० राधाकृष्णन का वैचारिक योगदान अविस्मरणीय है।

राज्यपाल ने कहा कि शिक्षकों की समस्याओं का समाधान किया जाना चाहिए तथा उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों की संख्या के अनुरूप शिक्षकों की संख्या को भी आवश्यक बताया। उन्होंने राज्य में शैक्षणिक माहौल को बेहतर बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा से जुड़े सरकार के सभी प्राधिकारों को आपस में समन्वय बनाकर काम करना होगा।

राज्यपाल ने पटना विश्वविद्यालय की पत्रिका के विशेषांक का विमोचन किया। उन्होंने उल्लेखनीय योगदान हेतु विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त एवं कार्यरत शिक्षकों, शिक्षिकाओं एवं कर्मियों को सम्मानित भी किया। इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

देश की सभी भाषाओं की विशेषता बनी रहनी चाहिए – राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने प्रभा खेतान फाउण्डेशन द्वारा होटल चाणक्या, पटना में 10 सितम्बर, 2023 को आयोजित 'आखर महोत्सव –बिहार' कार्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर कहा कि देश में अनेक भाषाएँ हैं और उनकी विशेषता बनी रहनी चाहिए। किसी क्षेत्र विशेष में ही कुछ दूरी पर भाषा बदल जाती है परन्तु इससे नये शब्दों के प्रयोग के चलते भाषा की समृद्धि ही होती है।

राज्यपाल ने कहा कि हमें अपनी भाषा का प्रयोग करने में कोई हिचकिचाहट नही होनी चाहिए। अपनी भाषा में कामकाज होने पर सामान्य जन इसे आसानी से समझ सकते हैं। उन्होंने कहा कि अध्यक्ष के रूप में उन्होंने गोवा विधान सभा का कामकाज वहाँ की भाषा कोंकणी में शुरू कराया तथा कार्यवाही का लाइव टेलीकास्ट होने के चलते आमजन इसे समझने लगे।

राज्यपाल ने हिन्दी समाचार पत्रों में शीर्षक एवं उप शीर्षक में अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग पर

कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (10 सितम्बर, 2023)

चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि घरों में प्रायः समाचार पत्रों के माध्यम से ही भाषा का परिचय होता है। ऐसे में इसका ध्यान रखा जाना आवश्यक है।

पुस्तकों को मित्र एवं मार्गदर्शक बताते हुए उन्होंने कहा कि बच्चों एवं अभिभावकों में पुस्तक पढ़ने की आदत होनी चाहिए। इसके लिए हमारे घरों में सद्साहित्यों की उपलब्धता होनी चाहिए। पाठकों के रहने पर ही साहित्यकार साहित्य का सृजन कर सकेंगे।

कार्यक्रम को सुप्रसिद्ध लेखिका पद्मश्री डॉ० उषा किरण खान एवं लेखक व पत्रकार श्री अनंत विजय ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर श्री रत्नेश्वर सिंह, प्रभा खेतान फाउण्डेशन की एक्जीक्यूटिव ट्रस्टी श्रीमती अनिंदिता चटर्जी तथा श्रीमती अन्विता प्रधान व श्रीमती अनुभा आर्या, लेखकगण, कविगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

फिजियोथेरापिस्ट नई तकनीकों का उपयोग कर मरीजों को गुणवत्तापूर्ण सेवा उपलब्ध करायें – राज्यपाल

कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते राज्यपाल (10 सितम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 10 सितम्बर, 2023 को 'विश्व फिजियोथेरापी दिवस' के अवसर पर गुरुनानक भवन, पटना में आयोजित कार्यक्रम के समापन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि फिजियोथेरापिस्ट को नई तकनीकों को अपनाकर मरीजों को गुणवत्तापूर्ण सेवा उपलब्ध कराना चाहिए। वे योग के साथ फिजियोथेरापी को मिलाकर उन्हें बेहतर सेवा दे सकते हैं। मरीजों को महसूस होना चाहिए कि फिजियोथेरापी से उनकी तकलीफ दूर हो रही है।

राज्यपाल ने कहा कि फिजियोथेरापी का क्षेत्र बड़ा एवं मरीजों के लिए काफी लाभदायी है। उन्होंने कहा कि फिजियोथेरापिस्ट को सरकारी अथवा किसी अस्पताल में नौकरी की तलाश करने के बजाए स्वयं का क्लिनिक शुरू करने का प्रयास करना चाहिए। उन्हें स्वयं में आत्मविश्वास लाकर अपने भविष्य को सँवारने हेतु खुद आगे बढ़ना चाहिए।

राज्यपाल ने बिहार में फिजियोथेरापिस्ट की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इस राज्य में फिजियोथेरापी की स्नातकोत्तर की पढ़ाई की व्यवस्था के संबंध में गंभीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम में बिहार स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति डॉ० एस०एन० सिन्हा, फिजियोथेरापी के शिक्षकगण, विद्यार्थीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

बिहार के मदरसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर देश एवं दुनिया के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करें –राज्यपाल

कार्यक्रम को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (11 सितम्बर, 2023)

"मदरसा सिस्टम पारंपरिक शिक्षा पद्धति है। बिहार के मदरसों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर देश एवं दुनिया के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। वहाँ आई०टी०, कम्प्यूटर आदि की भी पढ़ाई होनी चाहिए।'' –यह बातें राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना में 11 सितम्बर, 2023 को आयोजित मदरसा सिस्टम पर दो दिवसीय सेमिनार के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि बिहार के मदरसों को देश के सामने उदाहरण बनना चाहिए तथा वहाँ दी जानेवाली अच्छी शिक्षा एवं समाज व देश के हित में की जानेवाली गतिविधियों से सबको अवगत कराया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि पटना का खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी बिहार की शान और देश की संपत्ति है। यहां की किताबें हमारी संस्कृति को प्रतिबिम्बित करती हैं। इस पुस्तकालय ने विश्व को भारत की विशेषताओं से अवगत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना का परिभ्रमण किया तथा पुस्तकों के रख–रखाव एवं उनके डिजिटाईजेशन कार्य का निरीक्षण किया। उन्होंने वहाँ की अनेक पुस्तकों की पाण्डुलिपि, उनमें प्रयुक्त हस्तनिर्मित कागज तथा मूल रंगों आदि का अवलोकन किया तथा इनके विषयवस्तु से अवगत हुए। उन्होंने इन पाण्डुलिपियों को अमूल्य धरोहर बताते हुए इन्हें संरक्षित करने का निदेश दिया।
(19 अगस्त, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि हमारा देश अनेक वर्षों से पूरी दुनिया का मार्गदर्शन करता रहा है। यहां के लोग दूसरे देशों में अपने विचारों और विशेषताओं को लेकर गए हैं। उनके आचरण एवं संस्कार से ही पता चलता है कि वे भारतीय हैं। आपसी प्रेम और भाईचारा हमारी संस्कृति है। आज की शिक्षा पद्धति में इस विचारधारा को शामिल करने की जरूरत है।

राज्यपाल ने इस अवसर पर डा0 शायेस्ता खान द्वारा संकलित पुस्तक 'Mother Assassinated'के भाग–1 एवं भाग–2 का विमोचन किया। उन्होंने खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना में परिश्रम और लगन से काम करने वाले कर्मियों एवं दाराशिकोह पुरस्कार के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया। कार्यक्रम में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल0 चोंग्थू, खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी की निदेशक डा0 शायेस्ता बेदार एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

स्वामी विवेकानंद नर सेवा को ही ईश्वर की सेवा मानते थे- राज्यपाल

''स्वामी विवेकानंद नर सेवा को ही ईश्वर की सेवा मानते थे। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर दिव्यता है जिसे टटोलने और स्पर्श करने की जरूरत है। वह किसी व्यक्ति की बुराइयों को न देखकर उसकी दिव्यता पर ध्यान देते थे।'' –यह बातें, राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 11 सितम्बर, 2023 को विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी, शाखा–पटना द्वारा बिहार इंडस्ट्रीज एसोसियेशन भवन, पटना में आयोजित 'विश्व बंधुत्व दिवस' के अवसर पर कही।

उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में आयोजित धर्म सम्मेलन में ऐतिहासिक भाषण दिया था। उनके विचारों से प्रभावित होकर अन्य धर्मों के लोग हिन्दू धर्म अपनाने को तैयार थे, परन्तु स्वामी जी ने उन्हें ऐसा करने से मना करते हुए अपने धर्म का ही अवलंबन करने को कहा। गोवा में पूर्व में कराये गये धर्म परिवर्तन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति ऐसी नहीं है। भगवान श्रीराम ने भी लंका पर विजय के बाद विभीषण को वहाँ का राजा बनाया था।

राज्यपाल ने कहा कि स्वामी विवेकानंद सनातन धर्म और शाश्वत सत्य को लेकर शिकागो गये थे। यह हमारे सनातन विचार का ही सामर्थ्य था कि पूरा विश्व उनके पीछे

दीप प्रज्वलन द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मननीय राज्यपाल (11 सितम्बर, 2023)

हो गया। उन्होंने कहा कि विगत दिनों नई दिल्ली में आयोजित जी–20 की बैठक में विश्व बंधुत्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् का प्रकटीकरण हमें देखने को मिला। विश्व के अनेक देशों के नेता अपनी अनेक विविधताओं के बावजूद एक दिशा में जाने को तत्पर दिखाई पड़े। हमारा सौभाग्य है कि आज हम अपनी ताकत को पहचान कर उसे विश्व के समक्ष रख रहे हैं। भारत धीरे–धीरे आर्थिक महाशक्ति बनने को तैयार हो रहा है। इसमें हमारा योगदान चाहिए। आज विश्व के अनेक देश हमारी मुद्रा 'रुपया' में व्यापार एवं आर्थिक गतिविधियाँ संचालित करने को तैयार हैं।

राज्यपाल ने कहा कि प्रधानमंत्री ने आगामी 25 वर्षों के लिए हमें अमृतकाल का संदेश दिया है। यह स्व–जागरण, स्व–संस्कृति, स्व–इतिहास, और स्व–परंपरा को जागृत करने का समय है। अमृतकाल पुनर्निर्माण का समय है और इसमें हमारी सहभागिता आवश्यक है। इस सोच के साथ आगे बढ़ने और काम करने पर भारत वर्ष 2047 तक विश्वगुरु बन सकेगा। यह एक स्वप्न नही बल्कि, विजन और आनेवाले समय की वास्तविकता है। स्वामी विवेकानंद भारत को सर्वोत्तम स्थान पर देखना चाहते थे। उनके सपनों को पूरा करना हमारा दायित्व है और हमें इसका संकल्प लेना चाहिए।

कार्यक्रम को बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति डॉ० रामेश्वर सिंह ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर विवेकानंद केन्द्र, पटना के प्रांत सह संचालक श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते राज्यपाल (11 सितम्बर, 2023)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हमारे ऋषियों के अनुपम अवदानों तथा पं० दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का समावेश है –राज्यपाल

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में हमारे ऋषियों के अनुपम अवदानों तथा पं० दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का समावेश है। यह शिक्षा नीति भारत की गौरवशाली परम्परा, संस्कृति एवं इतिहास आदि के अनुरूप है तथा इसे प्राथमिक स्तर पर भी लागू किया जाना चाहिए।"– यह बातें माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 16 सितम्बर, 2023 को एस०एम०डी० कॉलेज, श्रीपालपुर, पुनपुन, पटना में 'सक्षम राष्ट्र के निर्माण में राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं एकात्म मानववाद दर्शन का योगदान' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कही।

कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (16 सितम्बर, 2023)

उन्होंने कहा कि हमारी शिक्षा हमारे देश की हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति, इतिहास, परम्परा आदि के अनुकूल होनी चाहिए। पं० दीनदयाल उपाध्याय ने इन्हें राष्ट्र की सोच के रूप में हमारे सामने रखा। राज्यपाल ने कहा कि राष्ट्र की भी आत्मा होती है जिसे पं० दीनदयाल उपाध्याय 'चिति' कहते थे। इसे भूलने पर देश में अनेक प्रकार की समस्याएँ आती हैं। इस चिति को भूलने के कारण ही हम अपनी संस्कृति को भूल गए, गुलाम बनें और राष्ट्र का विभाजन हुआ। आज हमें पुनः अपने 'स्व' को जागृत करने की जरूरत है ताकि हमारा राष्ट्र आगे बढ़ सके। पं० दीनदयाल उपाध्याय ने इसी विचार को हमारे सामने रखा।

राज्यपाल ने कहा कि अनेक वर्षों के बाद आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 शिक्षा को औपनिवेशिक विसंगतियों से मुक्त करने का प्रयास है। उन्होंने बिहार में सेमेस्टर सिस्टम पर आधारित स्नातक पाठ्यक्रम के लागू होने का श्रेय कुलपतियों एवं राज्य की जनता को देते हुए कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्राथमिक स्तर पर भी लागू किया जाना चाहिए ताकि बच्चे यहाँ की गौरवशाली विरासत से अवगत हो सकें।

उन्होंने कहा कि बिहार की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत अत्यन्त समृद्ध है। वैशाली विश्व में लोकतंत्र की जननी है। महिषी में आदि शंकराचार्य एवं मंडन मिश्र के बीच शास्त्रार्थ हुआ था। बिहार का संबंध भगवान बुद्ध, महावीर एवं सम्राट अशोक जैसे महापुरुषों से रहा है। यह माता सीता का जन्म स्थल है। हमें इस पर गर्व होना चाहिए। बिहार हरेक परिवर्तन में सदैव अग्रणी रहा है। उन्हें विश्वास है कि यह राज्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 को लागू करने में भी आगे रहेगा तथा देश की जनता इसका अनुसरण करेगी।

राज्यपाल ने इस अवसर पर महाविद्यालय के गोल्डेन जुबली भवन के भूतल पर सुसज्जित सरस्वती सभागार का लोकार्पण एवं प्रथम तल पर नवनिर्मित रामदयाल पुस्तकालय का उद्घाटन किया। उन्होंने स्मारिका एवं पुस्तकों का विमोचन भी किया।

कार्यक्रम को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्रोफेसर एवं भारतीय अनुसंधान इतिहास परिषद, नई दिल्ली के सदस्य श्री हिमांशु चतुर्वेदी ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति प्रो० आर०के० सिंह, महाविद्यालय के प्रधानाचार्य, शिक्षकगण, शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण, छात्र–छात्राएँ एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

माननीय राज्यपाल ने महाविद्यालय के गोल्डेन जुबली भवन के भूतल पर सुसज्जित सरस्वती सभागार का लोकार्पण एवं प्रथम तल पर नवनिर्मित रामदयाल पुस्तकालय का उद्घाटन किया (16 सितम्बर, 2023)

शिक्षक बच्चों को अच्छा इंसान बनायें–राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म दिवस पर डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, बी०एस०ई०बी० कॉलोनी, पटना में 26 सितम्बर, 2023 को आयोजित कार्यक्रम में शिक्षक–शिक्षिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि वे बच्चों को अच्छा इंसान के रूप में तैयार करें, क्योंकि एक अच्छा व्यक्ति हमेशा अच्छा और समाजपयोगी कार्य करता है, चाहे वह किसी भी पेशे से संबंध रखता हो।

उन्होंने बच्चों में मोबाइल आदि के अत्यधिक प्रयोग की आदत पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे बचने के लिए उन्हें खेलकूद और पढ़ने–लिखने के कार्य में लगाएँ। शिक्षक इसमें अधिक योगदान दे सकते हैं। उन्होंने उनसे बच्चों को पाठ्यक्रम से बाहर की विभिन्न विषयों से संबंधित अच्छी पुस्तकें एवं समाचार पत्र आदि पढ़ने के लिए प्रेरित करने को भी कहा।

इससे पूर्व राज्यपाल ने विद्यालय के छात्र–छात्राओं से संवाद किया तथा उन्हें अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अलावा अन्य सद्साहित्य के अध्ययन की सलाह दी। इससे होनेवाले लाभ की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि पुस्तकें हमारे मित्र और मार्गदर्शक हैं। उन्होंने उनसे समाचार पत्र भी पढ़ने को कहा। राज्यपाल ने छात्र–छात्राओं द्वारा पूछे जाने पर उन्हें बताया कि पर्यावरण संरक्षण एवं पेड़ों को बचाने के उद्देश्य से उन्होंने गोवा विधानसभा को पेपरलेस किया था। उन्होंने इसके तरीके भी बताये। उन्होंने राज्यपाल की नियुक्ति, योग्यता आदि के बारे भी बताया। उन्होंने छात्र–छात्राओं को अपनी ओर से पुस्तकें वितरित की और अध्ययनोपरान्त पत्र लिखकर उस पुस्तक के विषय में अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराने को कहा।

इस अवसर पर लेडी गवर्नर श्रीमती अनघा आर्लेकर, डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल्स, बिहार जोन के उप क्षेत्रीय पदाधिकारी–सह– प्रबंधक श्री शशिकांत झा, डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, बी०एस०ई०बी०, पटना के प्राचार्य श्री अविनाश चन्द्र झा एवं शिक्षक–शिक्षिकाएँ, बी०एस०पी० एच०सी०एल० के जी०एम० होल्डिंग श्री अनिरूद्ध कुमार एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

कार्यक्रम में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (26 सितम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल एवं लेडी गवर्नर छात्र-छात्राओ से बातचीत करते हुए (26 सितम्बर, 2023)

वैशाली

माननीय राज्यपाल ने वैशाली जिलान्तर्गत भगवान बुद्ध एवं वैशालीगढ़ में उत्खनन से प्राप्त सामग्रियों से संबंधित संग्रहालय, अभिषेक पुष्करणी झील, अस्थि कलश स्तूप, चतुर्मुखी महादेव मंदिर, अशोक स्तंभ, जैन मंदिर, चौमुखी महादेव मंदिर तथा राजा विशाल का गढ़ आदि स्थलों का परिभ्रमण किया एवं वहाँ की स्थिति का जायजा लिया। (09 सितम्बर, 2023)

नई दिल्ली

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने बिहार के माननीय सांसदों (लोक सभा एवं राज्य सभा) के साथ नई दिल्ली में बैठक की तथा बिहार के विकास से संबंधित विषयों पर चर्चा की। (27 जुलाई, 2023)

बरौनी

राज्यपाल ने बरौनी रिफाइनरी विस्तारीकरण परियोजना (बीआर-09) स्थल का भ्रमण किया तथा वहां के कर्मियों से बातचीत कर कार्यों की जानकारी ली। यह परियोजना बिहार के लिए काफी महत्वपूर्ण है। (23 जुलाई, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने ताज पैलेस होटल दरबार हॉल, नई दिल्ली में आयोजित 'बिहार विमर्श' कार्यक्रम एवं अटल मिथिला सम्मान समारोह, 2023 में भाग लिया। (09 जुलाई, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने बोधगया एवं राजगीर परिभ्रमण हेतु माननीय उप राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ के गया अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा पहुँचने पर वहाँ उनका स्वागत किया। इस अवसर पर लेडी गवर्नर श्रीमती अनघा आर्लेकर भी उपस्थित थीं। (29 सितम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने लंगट सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर के 124वें स्थापना दिवस पर ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 – एक आवश्यकता'' विषय पर आयोजित परिचर्चा में भाग लिया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि यह शिक्षा नीति एक समग्र दस्तावेज है और इसे बिहार में भी लागू किया जाना चाहिए। उन्होंने महाविद्यालय में नवनिर्मित देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्मृति पार्क एवं महाविद्यालय इंडोर स्टेडियम का उद्घाटन तथा महाविद्यालय के आंतरिक सड़क एवं चहारदीवारी का शिलान्यास भी किया। (03 जुलाई, 2023)

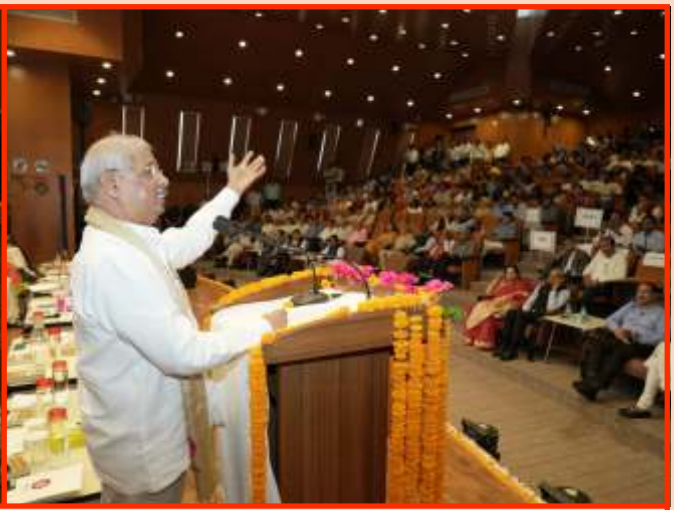

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर में आयोजित 'वैशाली फेस्टिवल ऑफ डेमोक्रेसी' कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भारत में लोकतंत्र की जड़ें काफी गहरी हैं। यहाँ की लोकतांत्रिक व्यवस्था पश्चिमी देशों से भिन्न थी। यहाँ लोगों को अभिव्यक्ति की आजादी जैसी स्वतंत्रताएँ थीं। बिहार का वैशाली लोकतंत्र की जननी है तथा इसके संदेशों को पूरे देश एवं दुनिया में प्रसारित करने की आवश्यकता है। (15 सितम्बर, 2023)

राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 77वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राजभवन में राष्ट्रीय झंडोत्तोलन किया। (15 अगस्त, 2023)

राजभवन में अयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल (15 अगस्त, 2023)

शुभारंभ कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल (13 सितम्बर, 2023)

राज्यपाल ने 'आयुष्मान भव अभियान' एवं 'आयुष्मान भव पोर्टल' के शुभारंभ कार्यक्रम में भाग लिया

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 'आयुष्मान भव अभियान' एवं 'आयुष्मान भव पोर्टल' के शुभारंभ कार्यक्रम में 13 सितम्बर, 2023 को राजभवन, पटना से वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के जरिए भाग लिया। अभियान का शुभारम्भ भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने किया।

इस अभियान का उद्देश्य विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं की संतृप्ति कवरेज (Saturation Coverage) करना है। यह केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की राष्ट्रव्यापी स्वास्थ्य सेवा पहल है, जिसके तहत देश के हर गाँव और कस्बे के अंतिम व्यक्ति तक स्वास्थ्य सेवाओं का कवरेज प्रदान किया जाना है।

मोतिहारी में 'प्राकृतिक खेती' पर आयोजित राज्यस्तरीय सम्मेलन का उद्घाटन करते राज्यपाल (17 सितम्बर, 2023)

राज्यपाल ने राजभवन आगमन पर पूर्व राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द का स्वागत किया (14 सितम्बर, 2023)

महान नीतिज्ञ आचार्य चाणक्य

आचार्य चाणक्य को ही कौटिल्य, विष्णुगुप्त और वात्सायन कहते हैं। चाणक्य का जन्म ईसा पूर्व 371 में हुआ था जबकि उनकी मृत्यु ईसा पूर्व 283 में हुई थी। उनका जीवन बहुत ही कठिन और रहस्यों से भरा हुआ है। इतिहासकारों के अनुसार मगध के सीमावर्ती नगर में एक साधारण ब्राह्मण आचार्य चणक रहते थे। चणक मगध के राजा से असंतुष्ट थे। चणक किसी भी तरह महामात्य के पद पर पहुंचकर राज्य को विदेशी आक्रांताओं से बचाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने अपने मित्र आमात्य शकटार से मंत्रणा कर धनानंद को उखाड़ फेंकने की योजना बनाई।

लेकिन गुप्तचर के द्वारा महामात्य राक्षस और कात्यायन को इस षड्यंत्र का पता लग गया। उसने मगध सम्राट घनानंद को इस षड्यंत्र की जानकारी दे दी। चणक को बंदी बना लिया गया और राज्यभर में खबर फैल गई कि राजद्रोह के अपराध में एक ब्राह्मण की हत्या की जाएगी। चणक के किशोर पुत्र कौटिल्य को यह बात पता चली तो वह चिंतित और दुखी हो गया। चणक का कटा हुआ सिर राजधानी के चौराहे पर टांग दिया गया। पिता के कटे हुए सिर को देखकर कौटिल्य (चाणक्य) की आंखों से आंसू टपक रहे थे। उस वक्त चाणक्य की आयु 14 वर्ष थी। रात के अंधेरे में उसने बांस पर टंगे अपने पिता के सिर को धीरे–धीरे नीचे उतारा और एक कपड़े में लपेट कर चल दिया।

अकेले पुत्र ने पिता का दाह–संस्कार किया। तब कौटिल्य ने गंगा का जल हाथ में लेकर शपथ ली– 'हे गंगे, जब तक हत्यारे धनानंद से अपने पिता की हत्या का प्रतिशोध नहीं लूंगा तब तक पकाई हुई कोई वस्तु नहीं खाऊंगा। जब तक महामात्य के रक्त से अपने बाल नहीं रंग लूंगा तब तक यह शिखा खुली ही रखूंगा। मेरे पिता का तर्पण तभी पूर्ण होगा, जब तक कि हत्यारे धनानंद का रक्त पिता की राख पर नहीं चढ़ेगा...। हे यमराज! धनानंद का नाम तुम अपने लेखे से काट दो। उसकी मृत्यु का लेख अब मैं ही लिखूंगा।'

इसके बाद कौटिल्य ने अपना नाम बदलकर विष्णु गुप्त रख लिया। एक विद्वान पंडित राधामोहन ने विष्णु गुप्त को सहारा दिया। राधामोहन ने विष्णु गुप्त की प्रतिभा को पहचाना और उन्हें तक्षशिला विश्वविद्यालय में दाखिला दिलवा दिया। यह विष्णुगुप्त अर्थात चाणक्य के जीवन की एक नई शुरुआत थी। तक्षशिला में चाणक्य ने न केवल छात्र, कुलपति और बड़े–बड़े विद्वानों को अपनी ओर आकर्षित किया बल्कि उसने पड़ोसी राज्य के राजा पोरस से भी अपना परिचय बढ़ा लिया।

सिकंदर के आक्रमण के समय चाणक्य ने पोरस का साथ दिया। सिकंदर की हार के बाद विष्णुगुप्त अपने गृह प्रदेश मगध चले आए और यहां से प्रारंभ हुआ उनका एक नया जीवन। उन्होंने विष्णुगुप्त नाम से शकटार से मुलाकात की। पिता का मित्र शकटार अब बेहद ही वृद्ध हो चला था। घनानंद ने जो मगध की हाल कर दी थी, उसे देख कर चाणक्य ने दुःख प्रकट किया। उधर, विदेशियों का आक्रमण बढ़ता जा रहा था और इधर यह दुष्ट राजा नृत्य, मदिरा और हिंसा में डूबा हुआ था।

एक बार विष्णुगुप्त भरी सभा में पहुंच गए। चाणक्य ने उस दरबार में क्रोधवश ही अपना परिचय तक्षशिला के आचार्य के रूप में दिया और राज्य के प्रति अपनी चिंता व्यक्त की। उन्होंने यूनानी आक्रमण की बात भी बताई और शंका जाहिर की कि यूनानी हमारे राज्य पर भी आक्रमण करने वाले हैं। इस दौरान उन्होंने राजा धनानंद को खूब खरी–खोटी सुनाई और कहा कि मेरे राज्य को बचा लो महाराज। लेकिन भरी सभा में आचार्य चाणक्य का अपमान हुआ, उपहास उड़ाया गया।

बाद में चाणक्य फिर से शकटार से मिलते हैं और तब शकटार बताते हैं कि राज्य में कई असंतोषी पुरुष और समाज हैं, उनमें से एक है चंद्रगुप्त। चंद्रगुप्त मुरा का पुत्र है। किसी

संदेह के कारण धनानंद ने मुरा को जंगल में रहने के लिए विवश कर दिया था। अगले दिन शकटार और चाणक्य ज्योतिषी का वेश धरकर उस जंगल में पहुंच गए, जहां मुरा रहती थी। उस जंगल में अत्यंत ही भोले–भाले लेकिन लड़ाकू प्रवृत्ति के आदिवासी और वनवासी जाति के लोग रहते थे। वहां चाणक्य ने चंद्रगुप्त को राजा का एक खेल खेलते हुए देखा। तब चाणक्य ने चंद्रगुप्त को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया और फिर शुरु हुआ चाणक्य का एक और नया जीवन।

कौटिल्य उर्फ विष्णु गुप्त अथार्त चणक पुत्र चाणक्य ने तब चंद्रगुप्त को शिक्षा और दीक्षा देने के साथ ही भील, आदिवासी और वनवासियों को मिलाकर एक सेना तैयार की और धनानंद के साम्राज्य को उखाड़ फेंककर चंद्रगुप्त को मगध का सम्राट बनाया। बाद में चंद्रगुप्त के साथ ही उसके पुत्र बिंदुसार और पौत्र सम्राट अशोक को भी चाणक्य ने महामंत्री पद पर रहकर मार्गदर्शन दिया।

चाणक्य से जुड़े महत्वपूर्ण बिन्दु

- चंद्रगुप्त मौर्य के पुत्र बिंदुसार मौर्य और उनके पुत्र सम्राट अशोक थे। आचार्य चाणक्य ने तीनों का ही मार्गदर्शन किया है।
- चाणक्य का उल्लेख मुद्राराक्षस, बृहत्कथाकोश, वायुपुराण, मत्स्यपुराण, विष्णुपुराण, बौद्ध ग्रंथ महावंश, जैन पुराण आदि में मिलता है। बृहत्कथाकोश के अनुसार चाणक्य की पत्नी का नाम यशोमती था।
- मुद्राराक्षस के अनुसार चाणक्य का असली नाम विष्णुगुप्त था। चाणक्य के पिता चणक ने उनका नाम कौटिल्य रखा था। चाणक्य के पिता चणक की मगध के राजा द्वारा राजद्रोह के अपराध में हत्या कर दी गई थी।
- चाणक्य ने तक्षशिला के विद्यालय में अपनी पढ़ाई पूरी की। कौटिल्य नाम से 'अर्थशास्त्र' एवं 'नीतिशास्त्र' लिखा। कहते हैं कि वात्स्यायन नाम से उन्होंने ही 'कामसूत्र' लिखा था।
- चाणक्य ने सम्राट पुरु के साथ मिलकर मगध सम्राट धनानंद के साम्राज्य के खिलाफ राजनीतिक समर्थन जुटाया और अंत में धनानंद के नाश के बाद उन्होंने चंद्रगुप्त को मगध का सम्राट बनाया और खुद महामंत्री बने।
- चंद्रगुप्त के दरबार में ही मेगास्थनीज आया था जिसने 'इंडिका' नामक ग्रंथ लिखा। चाणक्य के कहने पर सिकंदर के सेनापति सेल्युकस की बेटी हेलेना से चंद्रगुप्त ने विवाह किया था।
- आचार्य चाणक्य की मौत के बारे में कई तरह की बातों का उल्लेख मिलता है। कहते हैं कि वे अपने सभी कार्यों को पूरा करने के बाद एक दिन एक रथ पर सवार होकर मगध से दूर जंगलों में चले गए थे और उसके बाद वे कभी नहीं लौटे।

गंगा किनारे चाणक्य की ऐतिहासिक गुफा

पाटलिपुत्र के कण–कण में इतिहास रचा बसा है। मौर्य शासकों को शक्तिशाली और विस्तारवादी बनाने वाले चाणक्य से जुड़े धरोहरों में पटना सिटी चौक से कुछ कदम की दूरी पर स्थित है चाणक्य की ऐतिहासिक गुफा इसी में सबसे महत्वपूर्ण है। इसकी पहचान बचाने हेतु स्थानीय लोगों और बुद्धिजीवियों द्वारा तमाम प्रयास किए गए, पर सारे प्रयास विफल रहे हैं। ज्ञात है कि मौर्य वंश का शासन क्षेत्र पाटलिपुत्र से लेकर वर्तमान अफगानिस्तान तक था।

इस गुफा की वर्तमान स्थिति बेहद खराब है। गुफा के अंदर की मूर्ति पहले ही चोरी कर ली गई है। एक चारदीवारी बची है, जिस पर चाणक्य की गुफा अंकित है, स्थानीय लोग इसपर गोइठा (उपले) ठोकते हैं। पहले जो गुफा थी, वह मिट्टी और कूड़े से पूरी तरह ढक चुकी है।

यह गुफा पटना सिटी चौक के पास धर्मशाला घाट गली में स्थित है। कहा जाता है कि सेठ जगत राम के दीवान राय मदन लाल और अनंत लाल काफी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनकी बनवाई हुई विशाल धर्मशाला आज भी गुरु गोविन्द पथ के पास स्थित है। धर्मशाला घाट का निर्माण उनके पूर्वजों के हाथों ही हुआ था, इसलिए इस घाट का नाम धर्मशाला घाट पड़ा। यहीं पर गंगा किनारे एक गुफा है, जो कि चाणक्य की गुफा के नाम से प्रसिद्ध है।

कभी साधना का केन्द्र थी यह गुफा

चाणक्य ने अपनी शिखा (चोटी) तब तक नहीं खोलने की कसम खाई थी, जब तक नंद वंश का नाश न हो जाए। उन्होंने शांति प्राप्त करने के लिए अज्ञात रूप में इसी गुफा में वास किया था। तीसरी शताब्दी में मेगास्थनीज की लिखी पुस्तक 'इंडिका' के दूसरे संस्करण में इस स्थान का जिक्र है। हेमराज के द्वारा रचित एक अन्य पुस्तक के परिशिष्ट परवन में भी इस जगह की चर्चा की गई है। आचार्य चाणक्य यहीं से साधना करते हुए सम्राट को अपनी मंत्रणा देते थे।

इतिहासकारों के अनुसार, चाणक्य पाटलिपुत्र के इसी गंगा तट पर रहकर राज्य का संचालन करते थे। उनके शिष्य भी यहां रहते थे। सबसे महत्वपूर्ण है शिखा बंधी हुई चाणक्य की एक मूर्ति जो पूरे भारत में केवल यहीं पर स्थापित थी, लेकिन कालांतर में वह भी चोरी हो गई। कई इतिहासकारों व अध्येताओं ने इस गुफा के बारे में शोध कार्य किया है। फिर भी चाणक्य की इस गुफा में कई राज अब भी दफन हैं, जो खुदाई होने पर प्राप्त हो सकते हैं।

राज्यपाल से एनडीए के विधायकों, विधान पार्षदों एवं सांसदों ने मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा (14 जुलाई, 2023)

राज्यपाल से वियतनाम के 19 सदस्यीय शिष्टमंडल ने मुलाकात की (26 जुलाई, 2023)

राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर से 16वीं वर्ल्ड ड्रैगन बोट चौम्पियनशिप में भारतीय टीम की ओर से भाग लेने वाले बिहार के विजेता खिलाड़ियों ने राजभवन में मुलाकात की। 07 से 13 अगस्त, 2023 तक रायोंग, पटाया (थाइलैंड) में आयोजित इस चौम्पियनशिप में श्री सोनू कुमार वर्मा ने रजत पदक तथा श्री दीपक कुमार यादव, श्री दीपक कुमार, श्री अमन राज, श्री श्याम लाल मण्डल एवं सुश्री नीलू कुमारी ने कांस्य पदक जीता है। (17 अगस्त, 2023)

राज्यपाल ने बिशप स्कॉट गर्ल्स स्कूल की छात्राओं से मुलाकात की (01 अगस्त, 2023)

राज्यपाल से भारतीय प्रशासनिक सेवा के 10 प्रशिक्षु अधिकारियों ने मुलाकात की (07 अगस्त, 2023)

राज्यपाल से भारत में जर्मनी के राजदूत डॉ. फिलिप एकरमैन ने मुलाकात की (08 अगस्त, 2023)

मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने राजभवन में माननीय राज्यपाल से मुलाकात की (23 अगस्त, 2023)

राज्यपाल से सहकार भारती, बिहार के 24 सदस्यीय शिष्टमंडल ने मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा (28 अगस्त, 2023)

राज्यपाल ने न्यायमूर्ति श्री विपुल मनुभाई पंचोली को पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद की शपथ दिलायी (24 जुलाई, 2023)

राज्यपाल ने बिहार विद्युत विनियामक आयोग के नवनियुक्त सदस्य को शपथ दिलायी (16 सितम्बर, 2023)

पुस्तक विमोचन

राज्यपाल ने ''सदन में राम विलास पासवान'' पुस्तक का विमोचन किया (05 जुलाई, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने वीर कुँवर विश्वविद्यालय, आरा के प्रो. प्रमोद कुमार सिंह द्वारा लिखित उच्च शिक्षा से संबंधित चार पुस्तकों का विमोचन किया (15 जुलाई, 2023)

राज्यपाल ने नव नालंदा महाविहार द्वारा तैयार की गई शार्ट डाक्यूमेंट्री फिल्म ''बुद्धसारिका : ए लिविंग हेरिटेज'' तथा ''इंगेज्ड बुद्धिज्म कम्युनिटी हेरिटेज इंटरफेस इन एक्शन'' पुस्तक का विमोचन किया (31 अगस्त, 2023)

वितरण

प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत फूड बास्केट का वितरण

माननीय राज्यपाल ने टीबी रोगियों को फूड बास्केट वितरित की (01 अगस्त, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 01 अगस्त, 2023 को 25 टीबी रोगियों को राजभवन के राजेन्द्र मंडप में फूड बास्केट का वितरण किया। राज्यपाल ने प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत नि–क्षय मित्र के रूप में 51 मरीजों को गोद लिया है। उन्होंने इनमें से 26 मरीजों को 24 जुलाई को फूड बास्केट का वितरण किया था।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत वर्ष 2025 तक देश को टीबी मुक्त करना है।

राज्यपाल ने टीबी के मरीजों को नियमित रूप से दवा और पोषक आहार लेने को कहा। उन्होंने कहा कि दवा के लगातार सेवन तथा अपनी संकल्प शक्ति से वे टीबी से मुक्त हो जाएँगे। उन्होंने कहा कि हमें आगामी एक वर्ष में बिहार को टीबी से मुक्त करने का संकल्प लेना चाहिए।

इस अवसर पर राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल. चोंग्थू, चिकित्सकगण एवं चिकित्साकर्मीगण, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण व कर्मीगण, फूड बास्केट प्राप्त करनेवाले टीबी के मरीज तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

राज्यपाल ने वीर नारियों को सम्मानित किया

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 'गुलमोहर मैत्री' द्वारा बापू सभागार, पटना में 05 अगस्त, 2023 को आयोजित 'वीर नारी सम्मान समारोह' में वर्ष 1971 के भारत–पाक युद्ध में शहीद सैनिकों की पत्नियों (वीर नारियों) को सम्मानित किया।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा सीमा पर आधारभूत संरचनाओं का विकास करने के साथ–साथ सेना का आधुनिकीकरण भी किया जा रहा है। इससे हमारे सैनिकों का मनोबल बढ़ा है।

राज्यपाल ने कहा कि हमारे देश की सीमा पर तैनात जवान अपने जीवन की परवाह न करते हुए काफी कठिन परिस्थितियों में कार्य करते हैं और इसी के परिणामस्वरूप हम चैन से रहते हैं। हमें इस भाव को समझने की जरूरत है। राष्ट्रभक्ति हमारे मन में होना चाहिए। देश की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहूति देनेवाले शहीदों को स्मरण करना हमारा दैनिक कर्त्तव्य है। राज्यपाल ने रक्षाबंधन के अवसर पर हर घर से एक राखी सीमा पर तैनात जवानों के लिए भेजने का आवाहन किया।

शहीदों की पत्नी को स्मृति चिन्ह भेंट करते महामहिम (05 अगस्त, 2023)

इस अवसर पर राज्यपाल ने गुलमोहर मैत्री के आरोग्य मैत्री प्रोजेक्ट का शुभारंभ किया तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी भाग लिया। कार्यक्रम को बिहार विधान परिषद् के माननीय सभापति श्री देवेश चन्द्र ठाकुर, माननीय विधायक सुश्री श्रेयसी सिंह एवं मेजर जनरल श्री एम. इन्द्रबालन ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर गुलमोहर मैत्री के अध्यक्ष डॉ एस.एन.पी. सिंह एवं सचिव श्रीमती मंजू सिन्हा तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

राज्यपाल ने मगध विवि एवं तिलका माँझी भागलपुर विवि से जुड़े सेवान्त लाभों के मामलों की समीक्षा की

राज्यपाल ने मगध विश्वविद्यालय एवं तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय के सेवांत लाभ मामलों की समीक्षा की (21 जुलाई, 2023)

माननीय राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 21 जुलाई, 2023 को राजभवन में मगध विश्वविद्यालय, बोधगया एवं तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर से जुड़े सेवान्त लाभों के मामलों की समीक्षा की तथा लंबित मामलों के शीघ्र निष्पादन का निदेश दिया।

इस अवसर पर राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल. चोंग्थू, दोनों विश्वविद्यालयों के कुलपति, कुलसचिव, सेवान्त लाभ संबंधी नोडल पदाधिकारी, राज्यपाल सचिवालय के संबंधित पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

राज्यपाल ने कुलपतियों के साथ बैठक की

माननीय राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 16 अगस्त, 2023 को बिहार के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ राजभवन में बैठक कर स्नातक एवं स्नातकोत्तर के लंबित परीक्षाफल का प्रकाशन एवं प्रमाण–पत्र का वितरण, सेवान्त लाभ के मामलों का निष्पादन, शिक्षकों, शिक्षकेत्तर कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की बायोमेट्रिक उपस्थिति और सीबीसीएस व सेमेस्टर सिस्टम पर आधारित स्नातक पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन की समीक्षा की तथा महत्वपूर्ण निदेश दिये। बैठक में महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में ट्रांसजेंडरों की शिक्षा के संबंध में भी चर्चा हुई।

राज्यपाल की अध्यक्षता में आहूत इस बैठक में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल. चोंग्थू, बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

बैठक की अध्यक्षता करते राज्यपाल (16 अगस्त, 2023)

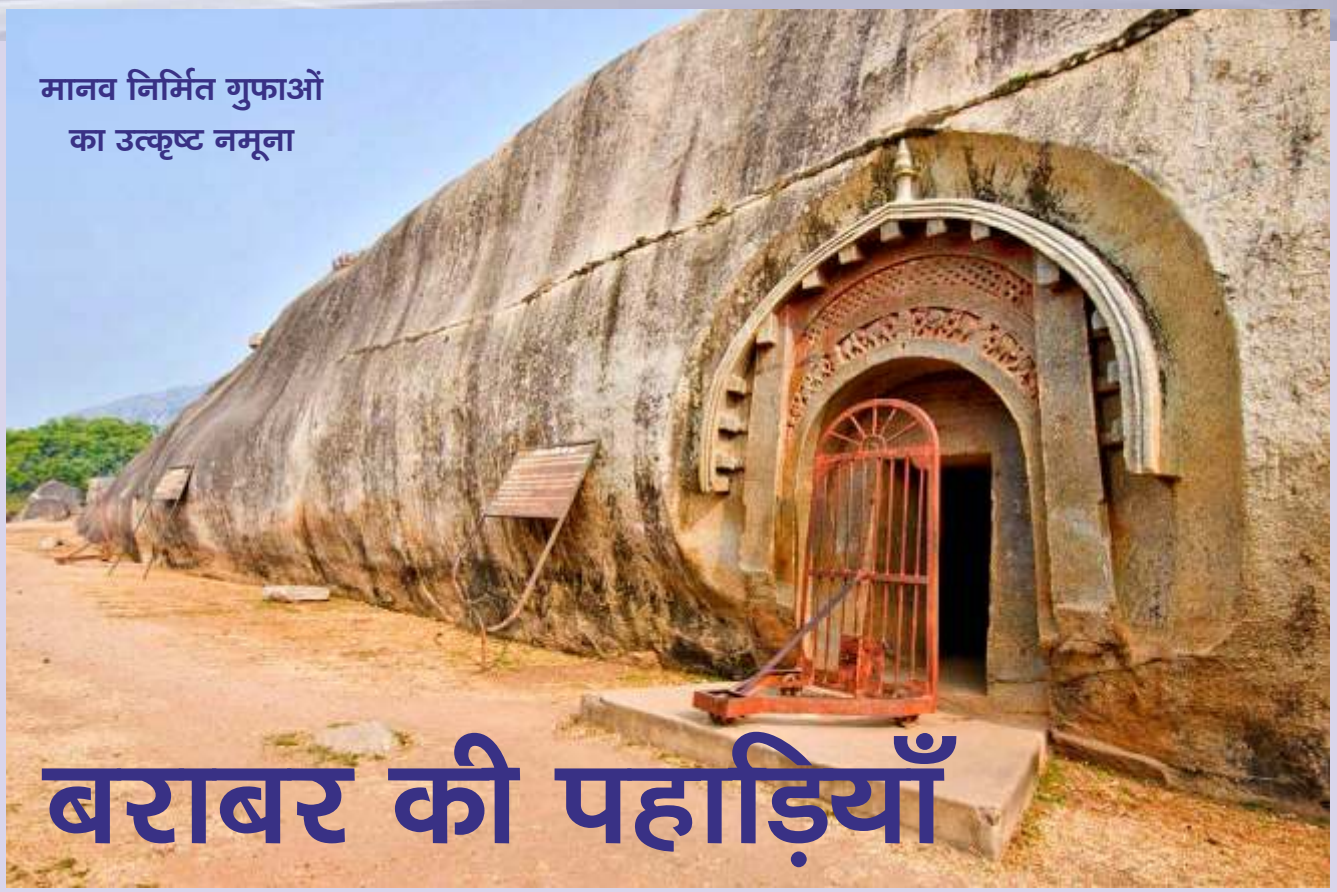

मानव निर्मित गुफाओं
का उत्कृष्ट नमूना

बराबर की पहाड़ियाँ

प्राचीन मगध साम्राज्य की हृदयस्थली और सम्प्रति बिहार प्रान्त के मगध प्रमंडल अन्तर्गत जहानाबाद जिला के दक्षिणी सीमा पर स्थित बराबर की पहाड़ी सदियों से इतिहास में रूचि रखने वालों व पर्यटकों को लुभाती रही है। इसके पश्चिम में स्थित कौआडोल पहाड़ी तथा पूर्व में स्थित नागार्जुनी पहाड़ी किसी बलशाली की दो शक्तिशाली भुजाओं की तरह प्रतीत होती हैं। बराबर पहाड़ी में स्थित 3 गुफाएँ, तो नागार्जुनी पहाड़ी में स्थित 4 गुफाएँ हैं। इन सात गुफाओं को समूह में सातघर या 'सतघरवा' के नाम से जाना जाता है। ये गुफाएँ भारत की प्राचीन मानवनिर्मित गुफाओं में शुमार हैं, जिनका निर्माण सम्राट अशोक और उनके पौत्र दशरथ के शासनकाल के दौरान किया गया था। बराबर की गुफाएँ चैत्य गृहों और सभागृहों का प्रारंभिक स्वरूप मानी जाती हैं, जिन्हें गुजरे काल की विशेष परिस्थितियों से जूझना पड़ा है।

lqnkek] d.k vkj yke'k _f"k dh xqQk,¡

बराबर पहाड़ियों में बसी तीन गुफाओं को सुदामा, कर्ण और लोमश ऋषि की गुफाओं के नाम से जाना जाता है। इनमें से सुदामा और लोमश ऋषि की गुफाएँ चैत्य के सभागृह हैं और कर्ण की गुफा एक आवास गृह है। इन गुफाओं की छत और दीवारों पर उच्च स्तरीय पॉलिश देखी जा सकती है। माना जाता है कि, यह पॉलिश अशोक स्तंभों पर पायी जाने वाली पॉलिश के समान है।

cjkcj dh okLrqdyk rFkk i,fy'k

मौर्यकाल और विशेषकर सम्राट अशोक के पूर्व इमारतों में लकड़ी का प्रयोग व्यापक पैमाने पर होता था, क्योंकि लकड़ी आसानी से उपलब्ध थी और पत्थर मुश्किल से। पर, जब सभ्यता के प्रसार के साथ–साथ जंगल कटते गये तो पत्थरों का व्यवहार भी अधिक होने लगा। सम्राट अशोक ने जीवित पत्थरों को काटकर उनमें सुंदर गुफाएँ बनवायी। ऐसा प्रयोग पहली बार हुआ और इससे प्रेरित होकर अजंता और एलोरा की विश्व प्रसिद्ध गुफाओं जैसी कई अन्य गुफाएँ भी बनायी गयी। गुफाओं की एक अन्य विशेषता मौर्यकालीन पॉलिश भी है, जो तत्कालीन कई स्तंभों और मूर्तियों में देखने को मिलती है।

लोमांस ऋषि की गुफा एकमात्र ऐसी गुफा है जिसके प्रवेश द्वार पर उत्कीर्णन (नक्काशी) का काम देखा जा सकता है। इस द्वार पर वास्तुकला के कुछ अलंकृत विवरण हैं, जो बाद में चट्टानों से खुदी गयी गुफाओं के लिए चलन बन गया। इसके प्रवेश द्वार पर बने मेहराब पर एक के ऊपर एक ऐसे दो अर्धवृत हैं, जिन में से ऊपरी अर्धवृत पर जाली का काम किया गया है तो निचले अर्धवृत पर बारीकी से उत्कीर्ण हाथियों की पंक्ति है जो स्तूपों को श्रद्धांजलि दे रहे हैं। पत्थर पर किया गया यह नक्काशी का काम लकड़ी की कारीगरी से प्रेरित है। पत्थर की कारीगरी से पहले लकड़ी की कारीगरी ही चित्रकला का प्रसिद्ध माध्यम थी।

lr?kjok vFkkr~ lkr ?kjk dh xQk,¡

पहाड़ी के दक्षिण भाग स्थित घाटी में लगभग 500 फीट लम्बी, 100 से 120 फीट चौड़ी तथा 30 से 35 फीट ऊंची सतघरवा के नाम से प्रसिद्ध ग्रेनाईट की एक चट्टान है, जिसमें मानव द्वारा प्रथम तराशी गयी गुफाएँ स्थित है। सतघरवा संभवतः सप्तगर्भ का अपभ्रंश है। इसका दूसरा अर्थ संतघर भी माना जा

सकता है। इसके उत्तरी भाग में कर्ण चौपड़ या कर्ण की झोपड़ी अथवा सुप्रिया गुफा के नाम से प्रसिद्ध एक गुफा है।

फ्रांसिस बुकानन हेमिल्टन ने इस कर्ण को महाभारत के युद्धिष्ठिर के भाई कर्ण के रूप में माना है, जिन्होंने संभवतः कुछ समय यहाँ साधु के रूप में गुजारा था। गुफा के बाहर प्रवेश द्वार के पश्चिमी छोर पर सम्राट अशोक (शासन काल 273–232 ई० पूर्व) के राज्यारोहण के उन्नीसवें वर्ष का ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण पाँच पंक्तियों का एक अभिलेख है। गुफा के भीतरी दीवारों पर दर्पण सी चमकदार पॉलिश तीसरी शताब्दी ई० पूर्व में मौर्यकाल की कलात्मक उत्कृष्टता का परिचायक है।

चट्टान के दूसरे भाग अर्थात् दक्षिण दिशा में संभवतः कृष्ण के सखा सुदामा के नाम से सुदामा गुफा है, जो सम्राट अशोक द्वारा शासन के 12वें वर्ष में आजीवकों को समर्पित की गयी थी। गुफा का मुख्य द्वार भी लकड़ी के बने द्वार की तरह दो ढ़लुए स्तंभों पर टिका लगता है। द्वार के पूर्वी छोर पर पालि भाषा में अभिलेख है, जिसमें गुफा को सम्राट अशोक द्वारा समर्पित किये जाने का उल्लेख है। इसमें कुछ चित्र भी उकेरे गये हैं।

विश्व झोपड़ी अथवा विश्वामित्र की झोपड़ी नाम से प्रसिद्ध बराबर पहाड़ी की चौथी गुफा इस चट्टान से पूर्व में है। इसमें भी दो कक्ष है, जिसमें बाहरी कक्ष 14 फीट लम्बा और 8 फीट 4 इंच चौड़ा है तथा आन्तरिक कक्ष 11 फीट व्यास वाला गोलाकार है। बाह्य कक्ष में एक अभिलेख है, जिसमें सम्राट अशोक द्वारा राज्यारोहण के 12वें वर्ष में गुफा को आजीवकों को समर्पित करने का उल्लेख है। बाह्य कक्ष पॉलिश युक्त है, जबकि आन्तरिक कक्ष बिना पॉलिश के तथा खुरदरा है। इस

प्रकार इन चार गुफाओं में कुल मिलाकर सात कमरे हैं, जिसके कारण सतघरवा कहलाता है।

ukxktZquh dh xqQk,¡

बराबर पहाड़ी से लगभग एक कि०मी० उत्तर–पूर्व में पौराणिक फल्गु नदी के पश्चिमी तट पर स्थित नागार्जुनी पहाड़ों में भी सम्राट अशोक के पौत्र देवानांप्रिय दशरथ द्वारा बनवायी गयी तीन गुफाएँ हैं। इन्हीं में से एक गुफा में प्रसिद्ध विद्वान नागार्जुन के निवास होने के कारण इस पहाड़ी का नाम नागार्जुनी पड़ा। पहाड़ी के दक्षिणी भाग के उत्तरी छोर पर दो गुफाएँ और दक्षिण भाग में भूतल से 60 फीट ऊँचाई पर तीसरी और सबसे लम्बी गोपी गुफा है। राजा दशरथ ने इसका निर्माण अपने सिंहासनारोहण के एक वर्ष उपरान्त 231 ई०पू० में करवाया था। सुरंगनुमा इस गुफा के दोनों छोर अर्द्धवृताकार है। यह पूर्व से पश्चिम 46 फीट लम्बी तथा 19 फीट 1 इंच चौड़ी और लगभग 8 फीट ऊँची है। इसकी छत मेहराबदार है और आन्तरिक भाग पॉलिश युक्त। इसमें इसे दशरथ द्वारा आजीवकों को समर्पित किये जाने संबंधी अभिलेख भी हैं। इस गुफा में मौखिरी राजा अनंतवर्मन ने कात्यायिनी (महिषासुरमर्दिनी) की एक प्रतिमा भी स्थापित की थी।

वापीय गुफा से सटे पश्चिम में स्थित वेदांतिक गुफा भदंतो अथवा बौद्ध भिक्षुओं को समर्पित है। पूर्वाभिमुखी यह गुफा चट्टानों के बीच प्राकृतिक रूप से खाली स्थान में है। यहां तक पहुंचने का मार्ग संकीर्ण है, जो मात्र 2 फीट 10 इंच चौड़ा, 6 फीट डेढ़ इंच ऊँचा, उत्तरी छोर पर 7 फीट 2 इंच लम्बा तथा दक्षिणी छोर पर 5 फीट 9 इंच लम्बा है। गुफा की लम्बाई 16 फीट 4 इंच तथा चौड़ाई 4 फीट 3 इंच है। इसकी दीवार अन्य गुफाओं की भांति सीधा न होकर गोलाकार है।

dkSvkMksy igkM+h

कौआडोल पहाड़ी के संबंध में किवदंती है कि कौआ के बैठने से इसकी चोटी हिल जाया करती थी, इसकी पहचान बौद्ध विद्वान शीलभद्र के मठ से की गयी है। सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी यहां की यात्रा की थी। पहाड़ी के पूर्वी बाजू में मठ के अवशेष है, जिसमे बौद्ध मंदिर में स्थित बुद्ध की भूमिस्पर्श मुद्रा में 8 फीट ऊँची विशालकाय प्रतिमा है जो कधों के पास 4 फीट चौड़ी और घुटनों के पास 6 फीट चौड़ी है। यह मूर्ति स्थानीय जनता में बोधासेन के नाम से प्रसिद्ध है, जिसके चेहरा का आधा भाग नष्ट हो गया है। पूर्व से पश्चिम 44 गज, उत्तर से दक्षिण 30 गज तथा लगभग 8 से 10 फीट ऊँची छत वाली ईंट से निर्मित इस मंदिर की दीवार और करीब 13 स्तंभ देखे जा सकते हैं। पहाड़ी के उत्तरी छोर पर सनातन धर्म की कई मूर्तियां हैं, जिसमें महिषासुर का वध करती चतुर्भुजी दुर्गा प्रमुख है।

मिठाई का राजा

सिलाव का खाजा

बिहार स्थित राजगीर और नालंदा के बीच एक कस्बा है सिलाव। सिलाव एक खास तरह की मिठाई के लिए बिहार ही नहीं बल्कि पूरे देश और यहां तक कि दुनिया के कई देशों में भी जाना जाता है।

सिलाव में बनने वाली यह खास किस्म की मिठाई खाजा के नाम से प्रसिद्ध है। वैसे तो खाजा देश के कई हिस्सों में बनाया और खाया जाता है, लेकिन सिलाव के खाजा की बात ही कुछ और है। यहां का खाजा बेहद खास होता है, जिसे 52 परतों (लेयर) में बनाया जाता है। यह देखने में पैटीज जैसी होता है। मीठा और नमकीन दोनों स्वाद में खाजा बनाया जाता है।

एक चर्चा के अनुसार तत्कालीन नालंदा विश्वविद्यालय के प्राचार्य शीलभद्र ने इस स्थल को खाजा नगरी के रूप मे विकसित किया था। इस स्थल पर ही भगवान बुद्ध और शीलभद्र की प्रथम भेंट हुई थी। उस समय शीलभद्र ने भगवान बुद्ध का स्वागत खाजा खिलाकर किया था। तब भगवान बुद्ध ने पुछा था यह क्या है? इसके जबाव में शीलभद्र ने कहा था कि खा–जा। भगवान बुद्ध ने खाने के बाद इसकी काफी प्रशंसा की। उसी समय से इस मिठाई का नाम खाजा प्रचलित हो गया।

सिलाव के खाजा को थोड़े दिन पहले भौगोलिक संकेत (जीआई टैग) मिला है। जीआई टैग मिलने से खाजा को न केवल अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है, बल्कि भारत के अलावा कई देशों में यथा इंग्लैंड, फ्रांस, दुबई आदि में उसकी मांग भी बढ़ गई है। खाजा बनाने वालों का दावा है कि जीआई टैग मिलने से यहां के खाजा की क्वालिटी को और बेहतर किया गया है।

वर्ष 2015 में बिहार सरकार ने भी खाजा निर्माण को उद्योग का दर्जा दिया। साथ ही इस उद्योग को सरकार की क्लस्टर विकास योजना से भी जोड़ा गया। ऑनलाइन मार्केटिंग की पहल से खाजा की लोकप्रियता और बढ़ी है।

सिलाव में कई ऐसे परिवार हैं जिनके यहां पुस्तैनी तौर पर पिछले 200 सालों से खाजा बनता रहा है। यहां का खाजा खाने में बहुत ही स्वादिष्ट और कुरकुरा होता है। खाजा बनाने में मैदा, शक्कर, वनस्पति तेल या शुद्ध घी की इस्तेमाल होता है। यह नमकीन और मीठा, दोनों ही स्वाद में बनता है।

बिहार के लोक जीवन में खाजा पूरी तरह से रचा–बसा मिष्ठान्न है। यहां ब्याह–शादी में खाजा उपहार के तौर पर देने का प्रचलन है। शादी में लड़कियों की विदाई के समय भी यह भेंट में दिया जाता है। सिलाव में खाजा की करीब 75 दुकानें हैं। पटना के विभिन्न हिस्सों में भी 'सिलाव के खाजा' के नाम पर खाजा की अनेक दुकानें हैं।

लोक नृत्य जट–जटिन

नारी मनोभाव की सहज अभिव्यक्ति

बिहार के कई अंचलों में जट–जटिन एक लोकप्रिय लोक नृत्य है। यह विशेष रूप से उत्तरी बिहार के मिथिलांचल, कोशी और भोजपुरी क्षेत्रों में प्रसिद्ध है। महिलाओं का यह नृत्य 'जट जटिन' पावस के दौरान चांदनी रात में किया जाता है। आधी रात से सुबह तक वयस्क लड़कियाँ और युवा गृहिणियाँ ढोल की थाप पर नाचने के लिए आँगन या घर के दरवाजे पर इकट्ठा होती हैं और दो टोलियों (पक्षों) में विभक्त हो कर नृत्य व गायन करती हैं।

बिहार का अतीत लोक सांस्कृतिक व नाट्य शैली में समृद्ध रहा है। बिहार के ग्रामीण अंचलों में प्राकृतिक उत्सव के रूप में मौसमी लोकगीतों तथा नृत्यों यथा झूमर, झमटा, बिरहणी, झिझिया, समवा–चकेवा की प्रस्तुति की प्राचीन परम्परा रही है। जट–जटिन उन्हीं लोकनाट्य व लोकगीतों में से एक है जो बिहार के ग्रामीण अंचलों में सदियों पूर्व से प्रचलित है। यह नृत्य मूलतः जट (पति) और जटिन (पत्नी) के बीच प्रेम के इजहार, इकरार, तकरार, मान–मनौव्वल और शिकवा–शिकायतों की मुखर सांगीतिक अभिव्यक्ति है।

जट–जटिन नाट्य का उत्स मिथिलांचल

इस लोकनाट्य का उत्स मिथिलांचल को माना जाता है, जिसे लेकर कई प्रकार की लोक कथाएं प्रचलित हैं, किन्तु लोककथाओं से इतर जट–जटिन का सम्बन्ध गांवों में वर्षा ऋतु से जोड़कर भी देखा जाता है। धान की रोपनी हो चुकी रहती है और गांवों में पुरुषों के लिए कोई काम नहीं है, इसलिए आजीविका के लिए वे परदेश चले जाते हैं। महिलाएं पति के पास नहीं रहने से उदास रहती हैं। रात के एकांत में वे लोकनृत्य व गीतों के जरिए अपने मनोभावों को जट–जटिन का स्वांग कर अभिव्यक्त करती है।

सदियों से रोजगार के लिए पलायन बिहार जैसे कृषि प्रधान राज्य की एक बड़ी समस्या रही है। बड़ी संख्या में आज भी खेती के काम से निवृत्त होने के बाद खाली समय में बिहार

के लाखों लोग किसी अन्य प्रदेशों में पलायन करते हैं। कार्तिक मास यानी लोक आस्था के महापर्व छठ के दौरान फिर वे अपने गांव वापस आते हैं और धान की कटनी आदि में व्यस्त हो जाते हैं। स्थानीय स्तर पर रोजगार नहीं रहने से प्रवासी होना बिहारियों की नियति रही है। लोकनृत्य जट–जटिन में इसकी मुखर अभिव्यक्ति होती है। एक तरह से जट–जटिन नारी मनोभाव की सहज अभिव्यक्ति का जरिया भी है।

जट–जटिन नृत्य के मूल विषय में प्रेमी जट और जटिन संवाद करते हैं जिनमें मान–मनव्वल, शिकवा–शिकायतें होती हैं। एक मैथिली लोकगीत में जट को परदेश जाने से जटिन रोकती है तो जटिन को प्रलोभन देते हुए जट कहता है–

'जाय दहिन गे जटिन देश रे विदेश
तोरा लय जे लयबौ जटिन गहना सनेस

जटिन को यह विरह स्वीकार नहीं है, इसीलिए वह कहती है–

गहना रे जटा तरबाक धूर
घरे रहु रे जटा नयना हजूर'.....

जटिन जट से भांति–भांति की शिकायतें करती है। साथ में कुछ मांगें भी करती है कि तुम परदेश गया तो मेरे लिए क्या लाया? अपनी फरमाइशें बताती हुई कहती है–

'सिनुरा जखन कहलियौ रे जटा
सिनुरा किए ने लयले रे.....

जट इसका जवाब देते हुए भोलेपन से कहता है कि मैं तो सिनुरा (सिन्दुर) कब का ला दिया था और उसे कोठी (अनाज रखने की जगह) पर रख दिया था, तुम सिन्दुर लगाई क्यों नहीं?

'सिनुरा जखन अनलियौ गे जटनी
कोठी पर कऽ धयले गे
हरि–हरि बाली समैया अभगली
सिनुरा किए ने लगौले गे.....'

भोजपुरी अंचलों में भी महिलाएं 'जट–जटिन' नृत्य व गायन के दौरान इसी तर्ज पर जट से जटिन शिकायत करती हुई कहती है–

'हरि–हरि बाली उमरिया
जटा विदेसवा काहे गवइले रे.....'

जट जटिन के इस सवाल पर जवाब देता है कि हे जटिन! गांव में कोई काम–काज नहीं था, आखिर परदेश नहीं जाता तो जीवन–यापन कैसे होता, मैं तुम्हारे खातिर ही तुमसे अलग हो कर परदेश गया–

'गंउवा में का करबे हे जटिन
खेतवा ना बारी नाही कारोबारी
तोहरे खातिर हे जटिन गइनी विदेश
लइनी चुनरिया आ गहना सनेस.....'

जटिन उदास होते हुए कहती है कि ऐसी साड़ी व आभूषण का मैं क्या करूंगी, जब उसे देखने वाला ही मेरे पास नहीं रहेगा तो किसके लिए उसे पहनुंगी? सवालिया लहजे में वह कहती है–

'आगी लागे हे जटा
चुनरिया आ गहना सनेस
केकरा खातिर पहिनबे जटा
जब तु रहबे विदेश.....'

पलायन के अलावा कई सामाजिक मुद्दों, जैसे सूखा, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं के साथ ही गरीबी, दुःख, प्रेम, पारिवारिक समस्याओं आदि की अभिव्यक्ति भी 'जट–जटिन' के माध्यम से होता है।

नृत्य के केन्द्र में होती हैं सामाजिक समस्याएं

इस नाट्य को एक जोड़े और उनके सहयोगियों में प्रस्तुत करने की परम्परा रही है। दोनों पक्षों के बीच गीतों द्वारा संवादों का आदान–प्रदान होता है। एक पक्ष जट की तरफ से तो दूसरा पक्ष जटिन की तरफ से संवादों को लय देता है। इस नाट्य में गीतों को वार्तालाप शैली में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें दोनों तरफ से महिलाएं या कुंवारी लड़कियों की टोली होती है जो अपने मधुर संवादों से लोक गीत गाती हुई समां बांधती है। इस नाट्य की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें किसी वाद्य की जरूरत नहीं होती है, बल्कि दोनों पक्षों की महिलाएं तालियां बजा कर वाद्य की कमी को पूरा करती हैं।

इस नाट्य को एक जोड़े और उनके सहयोगियों में प्रस्तुत करने की परम्परा रही है। दोनों पक्षों के बीच गीतों द्वारा संवादों का आदान–प्रदान होता है। एक पक्ष जट की तरफ से तो और दूसरा पक्ष जटिन की तरफ से संवादों को लय देता है। इस नाट्य में गीतों को वार्तालाप शैली में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें दोनों तरफ से महिलाएं या कुंवारी लड़कियों की टोली होती है जो अपने मधुर संवादों से लोक गीत गाती हुई समां बांधती है।

इस नाट्य में लघु प्रहसन का भी मिश्रित रूप देखने को मिलता है जिससे सहज ही हास्य की उत्पति होती है। जो महिलाएं या युवतियां जाट पक्ष की तरफ से होती है वह अपने माथे पर मोटा सफेद पगड़ी बांधती हैं तथा सफेद कुर्ता–बंडी पहन कर नृत्य प्रस्तुत करती हैं जबकि जटिन पक्ष वाली महिलाएं कनेर व बेली के फूलों से अपने आप को सुसज्जित करती और साड़ी के आंचल को अपने कमर में लपेट लेती हैं। दोनों पक्ष की महिलाएं पहले थिरकते हुए दोनों हाथों से ताली बजा कर नृत्य प्रारंभ करती है। सभी एक साथ कमर से उपर के भाग को आगे की ओर झुका कर दोनों हाथ आगे–पीछे करते हुए सामूहिक स्वर छेड़ती हैं और फिर सवाल–जवाब का दौर शुरू होता है।

जयंती / पुण्यतिथि

राज्यपाल ने शहीद पीर अली को उनके शहादत दिवस के अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित की (07 जुलाई, 2023)

माननीय राज्यपाल ने पूर्व सीएम सत्येन्द्र नारायण सिन्हा को उनकी जयंती के अवसर पर नमन किया (12 जुलाई, 2023)

कारगिल विजय दिवस के अवसर पर राज्यपाल ने शहीदों को श्रद्धांजलि दी (26 जुलाई, 2023)

माननीय राज्यपाल ने स्वर्गीय बी. पी. मंडल की जयंती के अवसर पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया (25 अगस्त, 2023)

माननीय राज्यपाल ने स्वर्गीय उपेन्द्र नाथ वर्मा की पुण्य तिथि के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की (28 अगस्त, 2023)

महाबोधि मंदिर बोधगया

महाबोधि विहार या महाबोधि मन्दिर, बोध गया स्थित प्रसिद्ध बौद्ध विहार है। यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर घोषित किया है। यह विहार उसी स्थान पर खड़ा है जहाँ गौतम बुद्ध ने ईसा पूर्व 6 ठी शताब्दी में ज्ञान प्राप्त किया था। पूरी तरह से ईंटों से बना बोधगया का महाबोधि मंदिर सबसे प्राचीन बौद्ध मंदिरों में से एक है। कहा जाता है कि सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी से पूर्व इस मंदिर का निर्माण कराया था। इसके बाद कई बार मंदिर स्थल का विस्तार और पुनर्निर्माण किया गया। 52 मीटर की ऊंचाई वाले इस मंदिर के भीतर भगवान बुद्ध की सोने की मूर्ति है, जहां भगवान बुद्ध भूमिस्पर्श मुद्रा में हैं।